दादी पोती की बातें

लेखक एवं प्रकाशक
धर्मपाल कपूर
बी.ए. ऑनर्स, एम.ए.

कोठी नं. 1135, सैक्टर 11,
पंचकूला-134112 (हरियाणा)
फोन : 0172-2567845
मोबाइल : 9356301618

संस्करण : 2021
प्रतियाँ : 1000

धर्मपाल कपूर
बी.ए. ऑनर्स, एम.ए.
कोठी नं. 1135, सैक्टर 11, पंचकूला
फोन : 0172-2567845
मोबाइल : 9356301618

टंकण एवं साजसज्जा : **अभिनव इंटरप्राइजिज, मो. 94683 40497, 81684 90221**
मुद्रक :

दो शब्द

''दादी पोती की बातें'' नामक पुस्तिका एक संवाद पुस्तिका है जिसमें दादी अपनी पोती को शिक्षा प्रदान करती है। वस्तुतः दादी बहुदेवतावाद जात-पात, निष्क्रियवाद, मूर्तिपूजा, अवतारवाद, विचित्र सनातन धर्म के पाखण्डों का खंडन करके अपनी पोती को सम्यक् ज्ञान प्रदान करती है। इसके उपरान्त महर्षि दयानन्द की अपार दया का भी उल्लेख करती है। जैसे महर्षि दयानन्द ने मूर्तिपूजा एवं अवतारवाद का खण्डन करके हमें वेदों की ओर लौटने का सन्देश दिया था। जैसे एक हिन्दी कवि ने लिखा है–

जन्म मरण से रहित है निश्चय वह करतार।

नियमबद्ध वह प्रभु है लेता नहीं अवतार।।

इस प्रकार हम देखते हैं कि प्रस्तुत पुस्तिका गृहस्थों के लिये अत्यंत उपयोगी है। गृहस्थ में दादी अपनी पोती को प्रस्तुत पुस्तिका सुनाकर उसमें अच्छे संस्कार जगा सकती है ऐसा मेरा विश्वास है।

यह पुस्तिका ज्ञानवर्धन के अतिरिक्त वर्तमान में राष्ट्र में फैली कुरीतियों, वैमनस्य, प्रान्तीय समस्याओं तथा सामाजिक विषमताओं को हल करने में बहुत अधिक सार्थक सिद्ध हो सकती है। राष्ट्र के एकीकरण के लिए यह ज्ञान रामबाण सिद्ध हो सकता है। राष्ट्र की उन्नति समाज की उन्नति पर ही निर्भर करती है। समाज की उन्नति का क्षेत्र वैदिक शिक्षा है जिसके प्रचार-प्रसार से राष्ट्र की सभी समस्याओं का समाधान प्राप्त किया जा सकता है। अतः मेरा मानना है कि वैदिक शिक्षा को अधिक से अधिक महत्त्व दिया जाना चाहिए।

प्रस्तुत पुस्तिका के लिखने में मुझे सर्वश्री जय किशन धीमान जी, रोशन लाल अग्रवाल जी, बलदेवराज जी, हरिकृष्ण शर्मा जी, मोहन लाल गुप्ता जी, अनुराग वालिया जी आदि ने सहयोग प्रदान किया है। श्री जय किशन धीमान जी ने इस पुस्तक के सम्पादन में विशेष योगदान दिया है। मैं

उन सभी लेखकों एवं कृतिकर्त्ताओं का भी अत्यंत धन्यवादी हूँ जिनकी कृतियों से मैंने संदर्भ उद्धृत किये हैं । जैसे कि संस्कृत में एक उक्ति है–

शतं वद एकं मा लिख

सौ बार कहो परन्तु एक बार भी मत लिखो क्योंकि लेखन में यदि कोई त्रुटि रह जाती है तो वह तुरन्त पकड़ी जाती है और लेखक की पोल खुल जाती है । मैंने प्रस्तुत पुस्तक के लिखने में पूर्ण सावधानी बरती है । परन्तु मैं भी संसार के प्रत्येक व्यक्ति की तरह अल्पज्ञ और अपूर्ण हूँ । अतः यदि कोई त्रुटि रह गई हो तो पाठकों से क्षमा चाहूँगा ।

धर्म पाल कपूर

तिथि : 18.5.2021

धर्मपाल कपूर
बी.ए. ऑनर्स, एम.ए.
कोठी नं. 1135, सैक्टर 11, पंचकूला
फोन : 0172-2567845
मोबाइल : 9356301618

निवेदन

श्री धर्मपाल कपूर जी ने साहित्य के क्षेत्र में अनेक ग्रन्थों की रचना की है। इन में से कुछ धार्मिक, कुछ साहित्यिक तो कुछ पाठ्यक्रमों से सम्बन्धित हैं। इन की प्रस्तुत पुस्तिका ''दादी पोती की बातें'' एक संवादात्मक पुस्तिका है जिसका मुझे वाचन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। जैसा कि नाम से ही विदित होता है इस पुस्तक में दादी अपनी पोती को देश के गौरवमयी इतिहास से परिचित कराते हुए उसमें आई हुई विषमताओं को प्रस्तुत करती है। इन विषमताओं का समाज में फैलने के अनेक कारण हो सकते हैं। उन कारणों पर भी प्रकाश डाला गया है। इसके अतिरिक्त उनके उन्मूलन पर भी सुझाव दिये गये हैं।

वस्तुतः भारत का इतिहास अत्यन्त प्राचीन है। महाभारत के बाद इसमें अनेकों बदलाव आये। विश्वगुरु के पद पर आसीन भारत आखिर परतन्त्रता की बेड़ियों में कैसे बंध गया इसके कारणों पर विशेष रूप से प्रकाश डाला गया है। मुख्यतः मूर्तिपूजा, जाति-पाँति, वर्णव्यवस्था का नष्ट होना, वेद विरुद्ध ज्ञान, मन्दिरों में राष्ट्र की अटूट सम्पत्ति का एकत्र हो जाना, छोटे राज्यों का होना तथा राज्यों का एक दूसरे से द्वेष करना, राष्ट्र की भावना का नष्ट होना आदि कारण भारत को परतन्त्रता की बेड़ियों में जकड़ने के रहे हैं।

पुस्तिका में लेखक ने जहाँ महर्षि दयानन्द के विचारों को प्रबलता प्रदान की है वहीं वेदों के सार्वभौम ज्ञान पर भी प्रकाश डाला है। महर्षि दयानन्द जी ''सत्यार्थप्रकाश'' में लिखा है।

यह आर्यवर्त्त देश ऐसा है जिसके सदृश भूगोल में कोई देश नहीं है..... इसलिये इस भूमि का नाम स्वर्ण भूमि है क्योंकि यही स्वर्णादि रत्नों को उत्पन्न करती है।

—बारहवाँ समुल्लास

अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण हैं जो भारत को विश्वगुरु पद पर आसीन करते हैं। परन्तु कालान्तर में विदेशों के द्वारा नष्ट-भ्रष्ट किये जाने से दारिद्रय को

प्राप्त हुआ । लेखक ने भारतीय इतिहास पर लेखनी चला कर भारत के गौरव को पुनः प्रतिष्ठित करने का एक सफल प्रयास किया है ।

अतः यह कहना उचित होगा कि प्रस्तुत पुस्तिका बहुत ही ज्ञानवर्धक एवं रुचिकर है । निस्संदेह यह समाज के लिए अत्यन्त प्रेरणादायक सिद्ध होगी ऐसा मेरा विश्वास है । मैं धर्मपाल कपूर जी की लम्बी और सुखद आयु के लिए ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ । निम्न शब्दों के साथ पुनः ईश्वर का धन्यवाद करता हूँ–

श्रुति मन्त्रों से स्मरण तुम्हारा, सुखप्रद आयु प्रदान करो ।
नानाविध यज्ञों के स्वामी, दिव्य बोध आदान करो । ।

जय किशन एम.ए.
म. नं. 76, गाँव. व डा. कोट,
जि. पंचकूला (हरियाणा)
मो. : 8168490221
9468340497

विशेष सूचना

1. स्वाध्याय, मनन और आत्मसात् ।
2. पाठकगण पुस्तक पढ़ने के पश्चात् किसी भी स्वाध्यायशील मित्र को इसे देने की कृपा करें ।
3. कोई भी जिज्ञासु अपनी इच्छानुसार इसकी प्रतियाँ फोटोस्टेट करवा कर स्वाध्यायशील मित्रों में प्रचार-प्रसार के लिये बाँट सकता है ।
4. पुस्तक केवल प्रचारार्थ लिखी गई है और सदुपयोग ही इसका मूल्य है ।
5. सर्वाधिकार लेखकाधीन ।

धर्मपाल कपूर
बी.ए. ऑनर्स, एम.ए.
कोठी नं. 1135, सैक्टर 11,
पंचकूला-134112 (हरियाणा)
फोन : 0172-2567845
मो० : 9356301618

विषयसूची

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ
1.	दादी पोती की बातें	1
2.	बहुदेवतावाद	5
3.	जात-पाँत	6
4.	निष्क्रियवाद	8
5.	मूर्तिपूजा	12
6.	मंदिरों का अपार वैभव	15
7.	महमूद गजनवी के आक्रमण	17
8.	मोहम्मद गौरी एवं तैमूर के आक्रमण	18
9.	पानीपत के युद्ध	19
10.	अवतारवाद	21
11.	विचित्र सनातन धर्म	23
12.	महर्षि दयानंद की अपार दया	32

1. दादी पोती की बातें

कृष्णा ने स्कूल से लौटकर आज जब घर में प्रवेश किया तो वह बड़ी खुश थी। उसका चेहरा प्रसन्नता से चहचहा रहा था। बूढ़ी दादी ने देखा तो उसका मन खिल उठा। कृष्णा को पास बुलाया। उसके सिर पर हाथ फेरा और बोली–'बेटी कृष्णा, मेरी रानी बिटिया, सच बता तू आज इतनी खुश क्यों हैं?'' खुश क्यों हूँ? बताऊँ आपको, दादी जी मि.....ठा.....ई..... खा...नी.....है.....।

कृष्णा ने बड़े चाव से अपने हाथ के काग़ज़ को आगे बढ़ाते हुए कहा– दादी जी, क्या आप को पता नहीं है, हमारी परीक्षायें हो रही हैं। आज इतिहास विषय की परीक्षा थी। मेरा इतिहास का पेपर बड़ा अच्छा हुआ है। लीजिये यह इतिहास का प्रश्नपत्र है। दादी जी! आप का तो यह सबसे प्रिय विषय है। आप की राय से ही मैंने अपनी बी.ए. कक्षा में इतिहास विषय लिया है अब खिलाइये न मिठाई। कृष्णा मिठाई के लिए शोर मचाते-मचाते दादी से लिपट गई।

दादी ने प्यार से कृष्णा का चुम्बन किया और प्रश्नपत्र पढ़ने लगीं। प्रश्नपत्र मध्यकालीन भारत से सम्बन्धित था। पहला ही प्रश्न था मध्य युग में भारत के पतन और परतन्त्रता के कारण सविस्तार बताओ। दादी यहीं रुक गई और बोली–बिटिया कृष्णा! यह बता, इस प्रश्न का तूने क्या उत्तर लिखा है। कृष्णा क्या देर करने लगी। उस ने फौरन ही सुनाना आरम्भ कर दिया। मध्य युग में मुसलमानों के मुकाबले हिन्दुओं की पराजय के अग्रलिखित कारण थे–

(1) हिन्दुओं में आपस में फूट थी, मुसलमानों में संगठन और एकता थी।

(2) मुसलमान आक्रमणकारी पहाड़ी प्रदेशों में रहते थे, इसलिए उनमें फुर्ती और चुस्ती थी। हिन्दुओं में मैदान में रहने के कारण आलस्य था।

(3) हिन्दु राजा विलासी और चरित्रहीन हो गये थे।

(4) मुसलमानों के पास तोपखाना था, राजमूत राजाओं के हाथी उसके सामने ठहर नहीं पाते थे ।

(5) मुसलमानों में धार्मिक जोश था, वे क़ुरान के नाम पर इकट्ठे हे जाते थे आदि ।

कृष्णा मानो एक श्वास में ही सब कुछ सुना गई और दादी को झिंझोड़ते हुए बोली—क्यों दादी, ठीक है न मेरा उत्तर? हाँ बेटी, ठीक लिखा है तूने । दादी ने अन्यमनस्क होकर कहा । कृष्णा ने देखा दादी जी का ध्यान किसी दूसरी ओर है । उन के स्वर में उत्साह नहीं है, इतना ही नहीं उनके चेहरे पर उदासी की रेखायें भी उभर रही हैं । कृष्णा झिझकी, कुछ पीछे हटी परन्तु फिर पूर्ववत् आग्रह के साथ धीरे स्वर मं बोली, ''क्यों दादी जी आप उदास कैसे हो गई?'' क्या मेरा उत्तर ठीक नहीं है? हमारी बहन जी ने तो हमें यही कारण बताये थे, मुझे खूब याद है । हाँ अगर आप यह सोचती हों कि बी.ए. की छात्रा होकर कृष्णा ने कैसा संक्षिप्त उत्तर लिखा है सो दादी जी यह तो मैंने केवल पाइण्ट्स बताये हैं? अपनी उत्तर पुस्तिका में तो इन में से प्रत्येक पाइण्ट्स पर मैंने काफी विस्तार से लिखा है । फिर आप उदास क्यों हो गई दादी जी? इस बार दादी ने कहा—मेरी अच्छी बेटी तुम्हारा उत्तर ठीक है, तुम्हारी बहिन जी ने भी जैसा इतिहास की पुस्तक में लिखा है वैसा ठीक ही बताया है । यह कहते दादी जी का स्वर और भी भारी हो गया था । दुःख की छाया उनके चेहरे पर अधिक घनी हो गई थी ।

कृष्णा से दादी के मन का कष्ट छिपा न रहा । वाणी में और भी रस घोलती हुई वह बोली—दादी जी, जब मेरा उत्तर ठीक है तब आप उदास क्यों है?

क्या करोगी बेटी, यह सब जानकर—दादी ने एक ठण्डी साँस लेकर कहा ।

बालिका कृष्णा के मन में अब तक कौतूहल पूर्ण जिज्ञासा पैदा हो चुकी थी । उस ने आग्रह की वाणी में कहा, दादी जी कुछ भी हो, आप को अपनी इस अज़ीब उदासी और मन के कष्ट का कारण बताना ही पड़ेगा । नहीं तो

समझ लीजिए कि आप की बेटी तब तक खाना नहीं खायेगी। अपनी प्यारी पोती के व्रत की बात सुनकर दादी ने कृष्णा को छाती से लगा लिया। उस से प्यार किया और बोली—मेरी बेटी कृष्णा भूखी क्यों रहेगी? बेटी, मैं तुझे अपनी उदासी का कारण अवश्य बताऊँगी। अब तो तू थकी है। हाथ मुँह धो। प्रभु नाम ले और भोजन कर। 2-4 दिन लगाकर मेहनत करके अपनी परीक्षा दे ले। परीक्षायें समाप्त होने पर मैं तुझे अपने मन की कष्ट-कहानी सुनाऊँगी।

कृष्णा इस पर राजी हो गई और अपनी परीक्षा की तैयारियों में लग गई।

—2—

कृष्णा की परीक्षा समाप्त हो चुकी हैं। परीक्षा के पश्चात् का अवकाश भी घोषित हो चुका है। इस समय तक कृष्णा की जिज्ञासा भी आसमान को छूने लगी थी। इसलिये आज जब कृष्णा प्रातःकाल अपनी चारपाई से उठी तो उसने निश्चय कर लिया कि आज वह अपनी दादी से उन की उस दिन की मानसिक व्यथा का कारण अवश्य जानेगी। कृष्णा जानती थी कि उस की दादी जी की दिनचर्या बड़ी निश्चित और नियमित है। उसमें दोपहर 2 बजे से 4 बजे का समय ही अवकाश का रहता है। वह ठीक दो बजे दादी जी के कमरे में जा पहुँची और नेत्रों की भाषा में ही अपना मनोगत निवेदन करके उनके समीप बैठ गई। दादी को अपनी प्यारी पोती के मन की बात समझते देर न लगी। अपनी दोनों बाहों में कृष्णा को समेटते हुए सप्यार वे बोलीं—बेटी कृष्णा! आ, आज मैं तुझे यह बताऊँगी कि उस दिन तेरे उत्तर को सुनकर मेरा मन क्यों उदास हो गया? अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए दादी ने कहा—बेटी, मध्य युग में हिन्दुओं की पराजय के कारण जो तूने बताये हैं वे तो ठीक हैं, परन्तु वे ऊपरी कारण हैं। मूल कारण, वास्तविक कारण नहीं है। मेरा ध्यान उसके मूल कारणों की ओर चला गया था और उन पर विचार करने से ही मेरा मन कष्ट से भर गया था। बेटी कृष्णा ! देखो ! एक व्यक्ति को जुकाम हो गया, छींक आने लगी उसे तो हम लोग प्रायः यही कहते हैं कि

उसे सर्दी लग गई है परन्तु उसे सर्दी क्यों लगी, सर्दी का मूल कारण क्या है, इस पर अक्सर हमारा ध्यान नहीं जाता। एक व्यक्ति को ज्वर हो आया था उनके सिर में दर्द हो गया तो प्रायः डॉक्टर ज्वर उतारने या सिर दर्द कम करने की दवा देकर अपने कर्त्तव्य की इतिश्री समझ लेते हैं। बहुत कम ऐसे डॉक्टर मिलेंगे जो यह देखते हों कि रोग का मूल कारण क्या है तथा प्रकृति के किन नियमों की अवहेलना करने या उन्हें भंग करने के कारण ज्वर या सिरदर्द हुआ है और तब रोगी को स्वस्थ जीवन के नियम बताकर उन पर चलने की प्रेरणा कर सदा के लिये ही उसे रोग मुक्त करने के अपने पवित्र कर्त्तव्य का पालन करते हों।

मेरी रानी बिटिया हमारे महान् देश की पराधीनता जगत्गुरु भारत की लम्बी दासता के कारण इतिहास में आपसी फूट विलासिता, चरित्रहीनता, विश्वासघात और नई युद्ध सामग्री की कमी आदि ही बताये जाते हैं। ठीक भी हैं ये। परन्तु हमारी गुलामी रूपी महारोग के ये तो बाहरी लक्षण मात्र हैं, वास्तविक कारण नहीं हैं। आखिर प्रश्न यह है कि सब को ज्ञान और प्यार बाँटने वाले, सबको चरित्रसंयम और सदाचार की शिक्षा देने वाले विश्वगुरु भारत में फूट, विलासिता और चरित्रहीनता आ कैसे गई? इस प्रश्न के ठीक-ठाक उत्तर में ही हमारी पराधीनता के मूल कारण छिपे हैं।

बेटी कृष्णा! दादी ने कहा—बात थोड़ी गहरी है परन्तु थोड़ा भी ध्यान देगी तो आसानी से समझ सकेगी। बेटी, तू जानती है। भारत धर्मप्राण देश है। यहाँ की मिट्टी में ही मानो धर्म भावना समाई है।

फिर क्या दादी जी यह धर्मप्राणता ही हमारी पराजय का मूल कारण है, ऐसा तो कभी-कभी मैं भी सोचती हूँ? कृष्णा बीच में ही बोल उठी।

मेरी बेटी, अच्छा प्रश्न किया तूने। मैं यही तो कहने लगी थी कि जहाँ सच्चा धर्म किसी व्यक्ति और राष्ट्र को ऊँचा उठाता है वहाँ जब हमने धर्म के नाम पर अधर्म को गले लगा लिया, अमृत का नाम लेकर जब विष को हम पी गये तो हमें सर्वनाश की लपटों ने ढक लिया। बहुदेवतावाद, जन्मगत-जाति व्यवस्थ, छुआछूत, निष्क्रियवाद, अवतारवाद, मूर्तिपूजा, मिथ्या महात्म्य,

गुरुडम, अन्धविश्वास, फलित ज्योतिष आदि ऐसे कीटाणु थे जो धर्म के क्रोड में धर्म की दुहाई देकर पलते रहे और जिन्होंने इस महान् राष्ट्र को भीतर ही भीतर खोखला कर दिया। एकमात्र यही सब भारत की अधोगति पतन और पराधीनता के मूल कारण हैं।

2. बहुदेवतावाद

दादी जी, बहुदेवतावाद से आप का क्या आशय है? कृष्णा का प्रश्न था। दादी ने देखा कि कृष्णा उनकी बातों में रस ले रही है, समझने की कोशिश कर रही है तो उनका मन फूल उठा। वे बोलीं—देखो बेटी,, जब तक हम यह मानते रहे कि हम सबका ईश्वर एक है, उसका मुख्य नाम ओ३म् है। ब्रह्मा, विष्णु, शिव, रुद्र, महादेव आदि उसी एक परमात्मा के गौणिक नाम हैं, जब तक हमारा एक धर्मग्रंथ रहा—वेद। हमारा एक गुरु मन्त्र रहा गायत्री। तब तक हममें एकता रही। सारा संसार तब तक न केवल हमारे ज्ञान वरन् तलवार का भी लोहा मानता रहा। भारत तब तक जगद्गुरु भी रहा और विश्व सम्राट् भी। परन्तु जिस दिन एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति इस वेदोपदेश को भुलाकर एक परमेश्वर के ही अनेक नामों पर अलग-अलग देवता घड़े गये वह दिन भारत के इतिहास में ही नहीं विश्व के इतिहास में सबसे बड़े दुर्भाग्य क दिन था। अलग-अलग देवता, अलग-अलग मन्त्र, अलग-अलग धर्मग्रंथ, अलग-अलग अखाड़े, अलग-अलग आचार्य, अलग-अलग तिलक छापे कण्ठी माला—अलगाव की इस धारा ने, बहुदेवतावाद के इस अभिशाप ने इस महान् राष्ट्र की एकता को छिन्न-विछिन्न कर डाला। जैसे पद्मपुराण का एक श्लोक है—

किमत्र बहुनोक्तेन ब्राह्मणाः येप्य वैष्णावाः।

न स्पृष्टव्या न वक्तव्यम द्रष्टव्याः कदाचन।।

अधिक क्या कहें जो विष्णु के अतिरिक्त किसी भी देवता को मानेगा उससे बात करना, उससे छूना तथा उसको देखना भी पाप है। इस पतन का

कुछ ठिकाना है । बेटी, इसी तरह एक देवता के मानने वालों ने दूसरे देवता के मानने वालों का अनादर किया । यह प्यारा देश आपसी द्वेष की भट्टी में धधकने लगा ।

3. जात-पाँत

बेटी कृष्णा ! आपसी फूट का दूसरा और बहुत बड़ा कारण है जन्मजात जाति पाँति की मान्यता । वर्ण व्यवस्था वैदिक धर्म की सबसे बड़ी विशेषता कही जा सकती है । परन्तु मेरी प्यारी बेटी, इसे भी जन्मगत जाति-पाँति का रूप देकर वैदिक संस्कृति के उस वरदान को भी अभिशाप में बदल दिया गया ।

कृष्णा को यह बात उतनी स्पष्ट न हो सकी, बोली—दादीजी बहुदेवतावाद एक पाप है और इस पाप के कारण ही मेरे महान् भारत के बगीचे में फूट के कंटीले झाड़ खड़े हो गये । यह बात ही समझ में बैठ गई परन्तु वर्णव्यवस्था और जन्मगत जाति-पाँति की बात यद्यपि मैंने अपने इतिहास में भी पढ़ी है परन्तु मैं साफ-साफ नहीं समझ सकी । कृपया आप और खुलासा कीजिये । दादी का अपनी प्यारी पोती के इस प्रश्न से बड़ी प्रसन्नता हुई बड़े प्रेम सहित बताने लगी—देखो बेटी एक परिवार के प्रत्येक व्यक्ति की योग्यता रुचि, शक्ति और स्वभाव अलग-अलग होते हैं । परिवार का मुखिया उनकी रुचि, योग्यता, स्वभाव और शक्ति का विचार करके उन्हें अलग-अलग काम बाँट देता है । इस तरह घर के सभी काम भी पूरे हो जाते हैं और व्यवस्था भी ठीक रहती है । स्वभावों की भिन्नता के कारण उनमें टकराव भी नहीं होता । काम के इस बँटवारे में कोई ऊँचा नीचा नहीं है । वर्णव्यवस्था का मतलब है कि यह समूचा राष्ट्र ही एक परिवार है उसमें प्रत्येक व्यक्ति को उसकी योग्यता, स्वभाव और शक्ति के अनुसार राष्ट्र की सेवा का काम मिलता है ।

प्रायः तीन प्रकार के कार्य किसी देश में होते हैं—(1) देश में हर प्रकार

के ज्ञान-विज्ञान को बढ़ाना, (2) राष्ट्र के भीतर न्याय और शान्ति की व्यवस्था तथा बाहरी आक्रमणकारियों से राष्ट्र की रक्षा, (3) देश को व्यापार और कला कौशल से समृद्ध करना। वर्णव्यवस्था में इन कामों का बँटवारा है। ज्ञानवर्धन करने वाला ब्राह्मण है। रक्षा और न्याय करने वाला क्षत्रिय है तथा व्यापार, खेती एवं पशु पालन करने वाला वैश्य है। इन सब को शरीर की मेहनत-मजदूरी के रूप में सहायता देने वाला शूद्र है। एक पिता के चार बेटों की तरह ये चारों ही भाई हैं, समान हैं। आज एक भाई किसान या व्यापारी है या वकील, डॉक्टर या अध्यापक है तो यह जरूरी नहीं है कि उसका लड़का भी किसान, व्यापारी, वकील, डॉक्टर या अध्यापक ही होगा। ठीक इसी प्रकार वर्णव्यवस्था यह नहीं कहती कि ब्राह्मण का लड़का भी ब्राह्मण का कार्य करेगा। हाँ, यदि उसमें वैसी योग्यता और गुण हों तो बेशक वह ब्राह्मण का काम कर सकेगा। यही नहीं वर्णव्यवस्था में एक और यह अंकुश भी हे कि अगर ब्राह्मण, क्षत्रिय आदि अपने कर्त्तव्य का पालन न कर सकेंगे तो उन्हें शूद्र आदि का काम दे दिया जावे और यह उत्साह भी है कि जिसे आज शूद्र का काम दिया गया है वह यदि उन्नति करके देश के अज्ञान को मिटाने की योग्यता अपने में पैदा कर सके तो उसे ब्राह्मण का काम दे दिया जावे।

इस प्रकार इस व्यवस्था में हर देशवासी को समान मानते हुए हर किसी को ऊँचा उठने और पतन से बचने का अवसर है। परन्तु जब राष्ट्रसेवा की इस सुन्दरतम व्यवस्था को जन्म से माना जाने लगा और ऊँच-नीच की नाशकारी भावना इसके साथ जोड़ दी गई तो न तो ब्राह्मणादि पर कोई अंकुश रहा और न शूद्र आदि को किसी प्रकार का उत्साह। परिणाम यह हुआ—

ब्राह्मण हो गये विद्याहीन क्षत्रिय हो गये विषयाधीन।

वैश्यों के व्यापार मलीन, या विधि भारत दुखिया-दीन।।

यह वर्णाश्रम धर्म ही हर नागरिक में राष्ट्रधर्म की भावना को जगाता था। इसी के कारण कभी सारा भारत देश ही एक परिवार बना हुआ था। इसी के कारण कभी भारत महाभारत बना था। जन्मगत जाति-पाँति न इस वर्ण व्यवस्था को मरण-व्यवस्था बना दिया। राष्ट्र-भावना खण्ड-खण्ड हो गई।

जातियों में से सैंकड़ों उपजातियाँ फट निकलीं। ऊँच नीच और छुआछूत का महारोग यहाँ तक बढ़ा कि एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति की छाया भी अपने शरीर पर पड़ जान को घोर पाप मानने लगा। तो मेरी प्यारी बेटी! अब तून समझ लिया होगा कि इस महान् राष्ट्र के निवासियों में आपसी फूट का यह दूसरा कारण कितना भयंकर है।

बेटी कृष्णा! इतिहास इस बात के साक्षी हैं कि इस जन्मगत जाति-पाँति, ऊँच-नीच और छुआछूत ने किस प्रकार इस महान् देश को निष्प्राण और निर्जीव बना दिया। इस दकियानूसीपन और संकीर्णता की बांहें इतनी बढ़ी कि एक ओर कृण्वन्तो विश्वार्यम् का घोष करने वाली सब को अपने में पचाने वाली आर्य जाति के प्रवेश का द्वार इस संकीर्णता के कारण एकदम बंद कर दिया गया और दूसरी ओर जरा-जरा सी बातों पर जाति बहिष्कार करके भारत माँ के करोड़ों लालों को धक्के दे देकर बेगाना और अराष्ट्रीय बना दिया गया। भारत राष्ट्र में रहते हुए भी उनकी राष्ट्रीयता भारतीय न रही। एकराष्ट्र के भीतर ही द्विराष्ट्रवाद का पाप पनपता रहा और अन्त में यह विस्फोट भारत माता के अंग-अंग के रूप में तब प्रकट हुआ, जब पाकिस्तान बना। हज़ारों माँ बहिनों की अस्मत लुटी। करोड़ों और अरबों की बरबादी हुई सब मिलाकर एक भयानक स्थिति बनी। तूने समझा होगा बेटी, कि राष्ट्र के इस घोर पतन और महाविनाश का मूल कारण था जन्मगत जाति-पाँति और उससे उत्पन्न संकीर्णता का पापमय कुचक्र।

4. निष्क्रियावाद

दादी जी! आप की बातों से तो जैसे एक नये रहस्य का उद्घाटन हो रहा है। अब आप निष्क्रियावाद का मतलब क्या है और उससे हमारे देश की अधोगति का क्या सम्बन्ध रहा है, यह समझाइये। कृष्णा आगे की चर्चा सुनने के लिए इतनी अधीर थी कि और कुछ न कह सकी।

मेरी प्यारी बेटी कृष्णा! दादी जी ने प्रश्न का उत्तर देते हुए कहा—इतनी

छोटी सी आयु में तेरी समझ और जिज्ञासा को देखकर मुझे बड़ी खुशी हो रही है। देखो! बेटी वेद में लिखा है–

ब्राह्मणोस्य मुखमासीद् अथवा ब्राह्मण राष्ट्र पुरुष का मुख है। वह मानव-समाज का मुकुट है। ब्राह्मण के गिरने से ज्ञान का केतु झुक जाने से विद्या का सूर्य लोप हो जाने से देश में अज्ञान का अंधेरा छा गया। जैसे जो सूझा वही धर्म के नाम से राष्ट्रवादियों के माथे मढ़ दिया। ब्राह्मण बनने के लिए अब विद्या, त्याग, तपस्या संयम का कोई आधार न रहने से वह विलासिता, आलस्य और स्वार्थ में आकण्ठ डूब गया। वेद शास्त्रों के अर्थ बदले जाने लगे। जिनमें मिलावट हो सकती थी मिलावट की गई और धर्म के नाम पर ऐसी-ऐसी निकम्मी, नीचतापूर्ण, रीति-रिवाज और मान्यतायें जारी हुई जिन्हें देखकर शर्म भी कतराने लगी।

यज्ञ के पीछे छिपी पवित्र, सरल और ऊँची भावना को एक लम्बे कर्मकाण्ड के मायाजाल में उलझाकर व्यक्ति का स्वार्थ हँसने लगा। गोमेध अश्वमेध और नरमेध के पवित्र अर्थों और भावों को भुलाकर हवनकुण्ड में गायों, घोड़ों और व्यक्तियों को काट-काट कर डाला जाने लगा। दो समकालीन राजकुमारों का अन्तर इस घोर पापाचार के विरुद्ध कराह उठा। बेटी कृष्णा! महात्मा बुद्ध और महावीर स्वामी का नाम तो तुम जानती ही हो। धर्म के नाम पर हिंसा के क्रूर व्यापार के विरुद्ध इन्होंने आवाज़ उठाई। रोग के मूल कारण पर बिना विचारे किये अहिंसा के इतने डोज इस राष्ट्र को पिलाये गये जिससे हिंसा का बाह्य लक्षण तो कम हुआ परन्तु इस राष्ट्र शरीर को अनेकों नये रोगों ने धर दबाया।

प्यार बेटी! अहिंसा की इन बोतलों की भरमार से मेरा प्यारा और महान् राष्ट्र नपुंसक और वीर्यहीन हो गया। वह दिन राष्ट्र-जीवन के दुर्भाग्य का दिन था जब महान् कहे जाने वाले सम्राट् अशोक ने पापियों के लिये काल रूपी शासक के धर्म की प्रतिनिधि रूपी अपनी प्यारी तलवार को त्याग कर क्षात्र धर्म को तिलांजलि दी थी। ऐसा त्याग कहने और सुनने में भले ही अच्छा लगे। परन्तु बेटी कृष्णा, एक शासक द्वारा क्षात्र धर्म को छोड़कर ब्राह्मण धर्म

की स्वीकृति वर्णसंकरता की निशानी थी। यह राष्ट्र धर्म का अपमान था यह विदेशी आक्रान्ताओं के लिए खुला निमन्त्रण था और यही हुआ। अशोक की आंखें मुंदते ही उसका विशाल साम्राज्य छिन्न-भिन्न हो गया। इतना ही नहीं कि सदियों विदेशी आक्रान्ता देश के गौरव और सम्मान के साथ खिलवाड़ करते रहे। इतिहास का पन्ना-पन्ना साक्षी है कि यह सब धर्म के नाम पर इस मिथ्या आचरण का ही परिणाम था।

बेटी कृष्णा! दादी ने अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए कहा—इस कर्त्तव्य पराङ्मुखता का नाम ही निष्क्रियावाद है। देखो! बेटी अच्छी से अच्छी चीज भी जब गलत तरीके से प्रयोग की जाती है तो वह हानिकारक सिद्ध होती है। अहिंसा मानव धर्म का कितना ऊँचा सिद्धान्त है। महर्षि पातञ्जलि ने यमों में इसे पहला स्थान दिया है। परन्तु जब इसी अहिंसा के अशुद्ध इन्जेक्शन राष्ट्रशरीर में दिये गये तो उनके विष की प्रबलता से राष्ट्र का सम्मान रो उठा। इस महान् देश को सदियों गुलामी के जुए में जुतना पड़ा और आज भी इस लंगड़ी और अपूर्ण अहिंसा का विष राष्ट्र-जीवन को पदे-पदे अपमानित कर रहा है। चीन और पाकिस्तान को धूर्ततापूर्ण करतूतें इसके परिणाम के रूप में हमारे सामने हैं।

मेरी प्यारी बेटी! बौद्ध और जैन मत के रूप में निष्क्रियवाद की ये विनाशकारी लहरें यहीं जाकर नहीं रुक गई। यह संसार दुःख का घर है, गृहस्थ जंजाल और बन्धन है। केवल निर्वाण की प्राप्ति करो। इस प्रकार के एकांगी और अधूरे उपदेशों का नतीजा हुआ—ढाल दीक्षा। छोटे-छोटे बालक युवक और युवतियाँ बुद्ध शरणं गच्छामि करते हुए संन्यास दीक्षा देने लगे। जिस देश के युवक-युवतियाँ हज़ारों और लाखों की संख्या में भिक्षापात्र लिए कर्त्तव्यहीन जीवन जियें इससे बढ़कर राष्ट्र धर्म का उपहास और क्या हो सकता है? परिणाम स्पष्ट है—बौद्ध विहार और बाद में हिन्दुओं के मन्दिर व्यभिचार और विलासिता के केन्द्र बनकर राष्ट्रशरीर का नासूर बन गये। जैसे संत मलूकदास लिखते हैं—

अजगर करे न चाकरी, पंछी करे न काम।
दास मलूका कहि गये सब के दाता राम।।

इस प्रकार की मान्यतायें निष्क्रियावाद के फोड़े के ही जहर से पैदा हुई जहरीली फुंसियाँ थीं इस अकर्मण्यवाद का एक और भी दुष्परिणाम हुआ। अच्छे व्यक्ति प्रायः धार्मिक होते हैं। धर्म के नाम पर निष्क्रियवाद की बूटी पीकर वे जब समाज से कटकर अलग-अलग जा बैठे तो समाज निकम्मे और दुष्ट स्वभावी जनों से भर गया। इतना ही नहीं—

बौद्ध मत जब विदेशों में फैला तो भारतीय बौद्ध विदेशी बौद्धों को अन्य भारतीयों की अपेक्षा अपना अधिक सगा और निकट का मानने लगे। आज के कम्यूनिस्टों की भाँति भारत की राष्ट्रीयता में उनकी आस्था निःशेष हो गई थी। इस का ऐतिहासिक प्रमाण हमें मुहम्मद बिन कासिम के भारत आक्रमण के प्रसंग में मिलता है जब कि भारतीय बौद्धों ने कासिम को मार्ग दिया तथा उसका जगह-जगह स्वागत किया और कई प्रसंगों में तो भारतीय प्रजा के खून से अपने अपवित्र हाथों को रंग कर राष्ट्र धर्म को कलंकित किया। अन्तर्राष्ट्रीयता का व्यामोह (अज्ञानता) प्रायः ऐसा ही होता है। भारतीय कम्युनिष्ट इसका उज्जवल उदाहरण है।

बेटी कृष्णा दादी अपनी बात कहे जा रही थी—महात्मा बुद्ध ने ऊँच-नीच, जाति-पाँति और यज्ञों में हिंसा के विरुद्ध विद्रोह का झण्डा उठाया यह बड़ी उत्तम बात थी। किन्तु जब धर्म-ध्वजियों ने ईश्वर और वेद का नाम लेकर अपने पाप-पाखण्ड का समर्थन करना चाहा तो चिकित्साशास्त्र वेद के अध्येता न होने के कारण महात्मा बुद्ध ने ईश्वर वेद और यज्ञों का भी दबा हुआ विरोध कर डाला और उनके शिष्य तो पूरी तरह अनीश्वरवादी हो गये। नतीजा यह हुआ कि ईश्वर की जगह बुद्ध और महावीर की पूजा ही आरम्भ हो गई। मूर्ति का पर्याय बुत शब्द बुद्ध का ही अपभ्रंश है जो यह बताता है कि मूर्तिपूजा का आरम्भ बुद्ध की मूर्ति पूजा से हुआ। महात्मा बुद्ध ने सच में बड़ी ईमानदारी से राष्ट्रशरीर की चिकित्सा की थी, किन्तु यह रोग के बाह्य लक्षण की चिकित्सा थी, मूल रोग की नहीं। फल यह हुआ कि बाह्य लक्षण तो दवा पर नये-नये महान् रोग फूट पड़े। मूर्ति पूजा एक ऐसा ही महा रोग था जिसने राष्ट्र की सम्पूर्ण शक्ति को ही चूस डाला।

5. मूर्तिपूजा

बुतपरस्तों का है, दस्तूर निराला देखो।
खुद तराशा है मगर नाम ख़ुदा रखा है।।
हर गुल (फूल) में हर शजर (वृक्ष) में,
हर शै (वस्तु) में हर बशर (व्यक्ति) में।
गर तू न देखे उस को, तो है कसूर तेरा।

बेटी कृष्णा! इस मूर्तिपूजा और निष्क्रियवाद के सम्मिलित दुष्परिणामों के सम्बन्ध में मुझे एक ऐतिहासिक घटना स्मरण आई। 998 ई. की बात है। मुहम्मद बिन बख्तियार खिलजी दो सौ घुड़सवारों के साथ उदन्तपरी पर चढ़ आया। वहाँ के राजा गोविन्दपाल के पास सेना के बदले भिक्षुओं का दल था किले के बदले विहार अधिक आबाद थे। मुंडित शीश पीत वस्त्र और आशीश की मुद्रा में भिक्षु समुदाय खिलजी की मतदत्त फौज को रोकने के लिए द्वार पर आ गया। सिपहसालार इब्राहीम ने उन्हें देखा। बुत की पूजा करने वाले फकीरों को देखकर खिलखिला कर हंस पड़ा वह। तो यह किला नहीं बुतखाना है। यहाँ तलवारों से टकराने वाले सिपाही नहीं, पीले कपड़ों में लिपटे बुतपरस्त हैं। खैर दौलत की कमी नहीं होगी और यह सोचता हुआ वह आगे बड़ा भिक्षुओं ने विनती की। वह गरज पड़ा, मेरी राह मत रोको, नहीं तो परिणाम बुरा होगा।

बेटी कृष्णा! कैसा दर्दनाक दृश्य था वह जब भिक्षुओं ने पीले वस्त्र दिखाकर भीतर न जाने की प्रार्थना की, उस ने तलवार दिखाकर रास्ते से हट जाने को कहा—वे शान्त मुद्रा में खड़े थे। उन की ढिठाई पर वह बिगड़ गया। तलवारों से छप छप की आवाज़ आई। एक नये भिक्षु ने एक घुड़सवार को धक्का देकर गिरा दिया। अब्राहीम की आँखों से आग बरसने लगी, इशारे भर की देर थी, भिक्षुकों के शीश तलवारों की धार से टकराने लगे। खून की धारा बह चली, पंचानन का पानी लाल हो गया। अवलाकितेश्वर बुद्ध तथा महास्थविर खण्ड खण्ड हो बिहार के प्रांगण में पड़े थे।

तो क्या दादी जी मूर्तिपूजा इतनी खराब चीज है? कृष्णा ने जिस का रोम रोम इस घटना को सुनकर व्यथित हो उठा था, अपनी दादी की ओर अभिमुख होकर कहा।

मेरी अच्छी बेटी! दादी का उत्तर था—यदि कोई यह पूछे कि भारत के पतन का केवल एक कारण बताओ तो उत्तर होगा—मूर्तिपूजा। यह एक ऐसी ठगिनी है जो ईश्वरोपासक को जीवन भर अपने मोहक जाल में अन्धविश्वास अन्ध श्रद्धा, गुरुडम, रुढ़िवाद, मिथ्यामाहात्म्य, मन्त्र तन्त्रवाद, फलित ज्योतिष आदि इसी महारोग के उपलक्षण है।

दादी जी, इसी तरह इतिहास की घटनाओं के उदाहरण देकर आप मुझे इस विषय का खुलासा समझाइये। कृष्णा ने सविनय प्रार्थना की। दादी जी ने सस्नेह पुनः कहना आरम्भ किया—मेरी रानी बेटी, मूर्तिपूजा और इसकी सेना ने हमारे राष्ट्र पर जिस बुरी तरह आक्रमण किया उसकी बड़ी दुःख भरी कहानी है। तू अपनी इतिहास की पुस्तक को तो जरा ले आ। मैं उसी से तुझे समझाऊँगी।

कृष्णा दौड़कर इतिहास की पुस्तक ले आई। दादी जी ने कहा—बेटी इसमें पढ़कर बात तो हमारे देश पर सबसे पहले किस मुसलमान ने आक्रमण किया। कृष्णा ने तुरन्त बता दिया कि 712 ई. में मुहम्मद बिन कासिम ने सिन्ध के राजा दाहिर पर आक्रमण किया।

इस युद्ध का पूरा विवरण पढ़ो, बेटी दादी ने कहा और कृष्णा पढ़ने लगी— कासिम के सैनिकों की संख्या 6000 थी। राजा ने 30000 सैनिकों सहित कासिम का सामना किया। आठ दिन तक घोर युद्ध हुआ। कासिम भागने को ही था कि लोभ से पराभूत एक ब्राह्मण उस से जा मिला और उस बताया कि यदि मन्दिर का झण्डा गिरा दिया जाये तो हिन्दू सेना भाग जायेगी क्योंकि उनके विश्वास के अनुसार झण्डा गिरने पर उन की विजय असम्भव है। फिर क्या था, झण्डे को किसी प्रकार गिरा दिया गया। झण्डा गिरते ही सारी सेना भागने लगी। राजा दाहिर घायल होकर गिर गया। उस का सिर काटकर एक भाले पर लगाकर दिखाया गया, जिसे देखकर सारी सेना भाग

खड़ी हुई। मन्दिर विध्वंस कर दिया गया। कासिम को लूट में 40 देगें सोने की मिलीं जिनमें 17200 मन सोना भरा था। इसके अतिरिक्त 6000 ठोस मूर्तियाँ सोने की थीं, जिसमें सब से बड़ी मूर्ति का तोल 30 मन था। हीरा, पन्ना, मोती, लाल और माणिक्य इतने थे, जिन्हें कई ऊँटों पर लादा गया। जिस ब्राह्मण और सेनापतियों ने राजा दाहिर से विरोध किया कासिम ने उन्हें भी क़त्ल करवा दिया।

तो बेटी, तूने मूर्तिपूजा जन्य अन्धविश्वास का दुष्परिणाम लिया कि किस प्रकार हमने जीती बाजी को शर्मनाक हार में बदल लिया। दादी ने अपनी बात जारी रखते हए कहा—''बेटी, वह तो तेरी इतिहास की पुस्तक में लिखा है, परन्तु इसी घटना का लेख सबसे पहले इस्लामी इतिहास ''चचनामा'' में दूसरे प्रकार से किया गया है। इस इतिहासकार का कहना है कि कासिम का स्थान-स्थान पर बौद्धों ने स्वागत किया और उसे प्रत्येक प्रकार की सुविधा पहुँचाई। सिन्ध के एक व्यक्ति काका के सम्बन्ध में जिसे इसने एक प्रसिद्ध बुद्धिमान और नीतिज्ञ बताया है, लिखा है कि जब कुछ प्रतिष्ठित जाट सामन्त इस के पास गये और पूछा कि यदि उस का परामर्श हो तो कासिम की सेना पर रात को छापा मारा जाये? उसने उत्तर दिया कि यदि तुम ऐसा करते हो तो करो, किन्तु सुनो। हमारे पण्डितों और योगियों ने ज्योतिष द्वारा यह भविष्यवाणी की कि हमारे देश को एक दिन मुसलमान विजय कर लेंगे। लोग उनकी बात नहीं मानते हैं और हानि उठाते हैं। तुम जानते हो कि मैं सदा अपने निश्चय पर अटल रहने वाला हूँ। बौद्धों की पुस्तकों में भी यह भविष्यवाणी की गई है और मेरा भी यही निश्चय है कि वास्तव में ऐसा ही होने वाला है।

तत्पश्चात् यह काका मुहम्मद बिन कासिम के पास चला गया और जाट सामन्तों के विचार से उसे सचेत कर दिया। उस ने अपनी धार्मिक पुस्तकों की भविष्यवाणी का भी उस में वर्णन किया। कासिम ने उस का स्वागत किया और उसे अनेक बहुमूल्य पारितोषक भेंट किये। इसी प्रकार राजा दाहिर के बहुत से विरोधी सेनानायकों ने भी जाकर उसकी अधीनता स्वीकार कर ली। सम्भवतः यह काका वही देशद्रोही ब्राह्मण अथवा पुजारी था, जिसका अन्य

इतिहासकारों ने कासिम से जा मिलने का उल्लेख किया है। यह है मुसलमानों द्वारा भारत को पराधीन करने वाले प्रथम युद्ध का संक्षिप्त विवरण जिस के फलस्वरूप लगभग चौदह सौ वर्ष व्यतीत होने पर हमारे बन्धन अब कहीं ढीले हुए हैं और वह भी मुसलमानों द्वारा इस देश की खण्ड-खण्ड करने के दुःखद परिणाम के पश्चात्।

उपर्युक्त उदाहरणों से सिद्ध है कि इस युद्ध में हमारी पराजय के कारण स्पष्ट रूप से दी है और वह राजनैतिक न होकर नितान्त धार्मिक और मानसिक हैं। पहला हिन्दुओं का यह विश्वास कि मन्दिर की मूर्ति एक चैतन्य दैवी शक्ति है और हमारी जय और पराजय उसकी इच्छा पर निर्भर है। यदि वह अप्रसन्न है तो हमारा सब प्रयत्न निष्फल है। झण्डे का गिर जाना उसकी अप्रसन्नता का सूचक है। दूसरा अपने साहस और पौरुष पर विश्वास न रखकर ज्योतिषियों के हाथ अपने भाग्य को सौंप देना। जिन भविष्यवाणिों का काका ने जो स्वयं भी ज्योतिषी प्रतीत होता है, उल्लेख किया है, वह क्या है? और कहाँ की है, इन का तो कुछ पता नहीं, किन्तु यह निर्विवाद है कि इस में भी विदेशी आक्रमणकारियों का अवश्य ही हाथ है, जो उस समय के हिन्दुओं के अन्धविश्वासों से लाभ उठाने का पूरा प्रयत्न करते थे। काका जैसे देशद्रोहियों का जहाँ बहुदेवतावद के परिणामस्वरूप इतनी साम्प्रदायिक विभिन्नता हो, मिल जाना तो कोई कठिन बात है ही नहीं। इस प्रकार का अन्धविश्वास, आत्मसंशय तथा भीरुता मूर्तिपूजा का स्वाभाविक फल है। जो जाति जड़मूर्ति के भय से थर-थर काँपे वह एक ईश्वर विश्वासी निर्भीक जाति के सम्मुख कब तक ठहर सकती थी?

6. मन्दिरों का अपार वैभाव

बेटी कृष्णा! दादी कहती जा रही थीं—हमारे इस दुर्भाग्य की कहानी यहीं समाप्त नहीं हो जाती। इस मूर्तिपूजा ने हमारी महान् आर्य जाति की सर्वथा जड़ भीरू और कूप मण्डूक बना दिया था जिसका दुहरा लाभ अरब शासकों ने उठाया। मुलतान के एक देव मन्दिर के सम्बन्ध में प्रसिद्ध अरब यात्री अलबरूनी ने लिखा है कि मुलतान का यह विशाल देव मन्दिर नगर

विजय होने पर भी सुरक्षित रखा गया। अरबवासियों ने मन्दिर से आर्थिक और राजनैतिक दोनों लाभ उठाये। राजनैतिक यह कि जब कोई हिन्दू राजा मुलतान पर आक्रमण करने की तैयारी करता तो अरब शासक यह धमकी देकर भयभीत कर देता कि यदि उसने यहाँ आक्रमण किया तो इस मन्दिर को विध्वंस कर दिया जायेगा। यह सुनकर अन्धविश्वासी, धर्मभीरु राजा रुक जाता। आर्थिक लाभ यह कि सारे भारत के लोग यहाँ की यात्रा को आते और चढ़ावा चढ़ाते थे जो अरब शासक के राज-कोष में ले लिया जाता था। अरब यात्रियों का कहना हे कि इस मन्दिर में अतुल चाँदी सोना था। दो-दो सौ अशर्फियों का तो केवल अगर ही यहाँ जलाने को आता था। पुजारी स्वार्थरत थे। वह अपने व्यवसाय को चलता हुआ देखना चाहते थे। राष्ट्र का अपार धन कहाँ जाता है इसकी उन्हें चिन्ता न थी। वह उसमें अपना भाग सुरक्षित रखना चाहते थे और वह मुसलमान शासकों से उन्हें मिल ही जाता था।

तो क्या दादी जी हमारी राजनैतिक दासता के साथ ही इस ओर आर्थिक दुरावस्था का कारण भी यही मूर्तिपूजा है? कृष्णा ने विस्फारित नेत्रों से पर शोकपूर्ण मुद्रा में कहा।

निस्सन्देह मेरी बेटी, हमारा यह महान् देश जो कभी सोने की चिड़िया और पारसमणि कहा जाता था इतना दरिद्र हो गया इस का बहुत बड़ा कारण मूर्तिपूजा ही है।

वह कैसे खोलकर समझाइये दादी जी! कृष्णा ने पूछा। दादी कहने लगी—देखो बेटी, बहुदेवतावाद अथवा पौराणिक सम्प्रदायवाद के उत्कर्षकाल में हिन्दू मन्दिर अपार धन राशि के केन्द्र बन गये। राष्ट्र का सम्पूर्ण वैभव और धन सिमिट-सिमिट कर इन मन्दिरों में इकट्ठा हो गया। ऐसे अनेक मन्दिरों का उल्लेख मुस्लिम यात्रियों और इतिहासकारों ने किया है। एक अरब लेखक इब्बनदीम ने एक ऐसे ही मन्दिर के अपार वैभव का वर्णन करते हुए लिखा है—गुजरात के राजा बल्लभराय की राजधानी महानगर के देव मन्दिर में सोने, चांदी, लोहे, पीतल, हाथी और हर प्रकार के बहुमूल्य पाषाण और मणियों की 20000 मूर्तियाँ हैं। उस की एक मूर्ति बारह हाथ ऊँची स्वर्ण की है जो स्वर्ण के सिंहासन पर विराजमान है। वह सिंहासन एक गोलाकार ऊँचे स्वर्ण के

भवन में स्थित है । यहाँ भवन स्वच्छ मोतियों और लाल हरे , पीले-नीले रंग के जवाहिरात से सुसज्जित है । इस प्रकार के अनेकों मन्दिरों का उल्लेख मिलता है । विदेशी मुसलमानों द्वारा इन मन्दिरों पर आक्रमण हुए और राष्ट्र की अपार सम्पत्ति लूटकर विदेशों में ले जाई गई । इतिहास इसका साक्षी है ।

7. महमूद गजनवी का आक्रमण

बेटी कृष्णा ! कासिम के 300 वर्ष पश्चात् महमूद गजनवी ने इसी लूट के लालच से इस देश पर 17 आक्रमण किये । इस ने नगरकोट के मन्दिर को विध्वंस करके 700 मन सोने चाँदी के बर्तन, 740 मन सोना, 2000 मन चाँदी और 20 मन हीरे मोती जवाहरात लूटे ।

क्यों दादी जी, महमूद गजनवी ने तो सोमनाथ के मन्दिर पर आक्रमण किया था । कृष्णा ने जिज्ञास की । दादी ने कृष्णा की रुचि दिखाने के लिए प्यार करते हुए कहा—हाँ बेटी, वही तो मैं तुझे सुनान लगी हूँ । जिस समय महमूद ने गुजरात के इस प्रसिद्ध मन्दिर पर आक्रमण किया, दो चार क्षत्रिय राजाओं ने मिलकर उस का सामना करने का निश्चय किया । तुरन्त पुजारियों के यह कहने पर वे उत्साहहीन होकर शान्ति से बैठ गये, कि महादेव बाबा जब तीसरा नेत्र खोलेंगे तो आक्रान्ता स्वयं ही भस्म हो जायेगा । इस विशाल मन्दिर में अगणित बहुमूल्य रत्न लगे थे । 40 मन भारी सोने की जंजीर में एक भारी घण्टा लटक रहा था । उस में 5 गज ऊँची शिव मूर्ति अधर लटक रही थी । महमूद ने से अपने हाथों से खण्ड-खण्ड कर डाला और असंख्य रत्नों का ढेर लूट लिया । शिव-मूर्ति के टुकड़ों को वह गजनी ले गया । अपमानस्वरूप उस ने एक टुकड़ा मस्जिद की सीढ़ियों में और एक अपने महल की सीढ़ियों में लगा दिया ।

महमूद ने मन्दिर के स्थान पर मस्जिद खड़ी कर दी, जो अब तक खड़ी हैं कासिम के आक्रमण के समय न देवी भक्तों की रक्षा कर सकी और न अब शिव की समाधि भंग हुई । महमूद गजनवी के लगभग 150 वर्ष पश्चात्

मुहम्मद गौरी ने पृथ्वीराज और जयचन्द की आपसी फूट का लाभ उठाकर मुस्लिम शासन की नींव डाली दूसरी ओर मन्दिरों को लूटा। कन्नौज में इसने 1000 मन्दिर विध्वंस किये और 400 ऊँटों पर लूटा हुआ सोना और चाँदी लाद कर अफगानिस्तान ले गया।

बेटी कृष्णा! सोमनाथ, काशी, मथुरा आदि तीर्थ कहे जाने वाले स्थानों की छाती पर मन्दिरों को मिटाकर उनकी जगह पर खड़ी हुई मस्जिदें आज भी मूर्तिपूजा की निःसारता तथा उसे इस देश की पराधीनता का प्रबल कारण घोषित कर रही है। न केवल पश्चमोत्तर भारत वरन् दक्षिण के मन्दिरां में भी अपार धन वैभव इकट्ठा था। मथुरा की लूट में भी महमूद को असंख्य धन मिला। इस प्रकार मूर्तिपूजा का यह अभिशाप ही इस स्वर्णमय और महान् देश की ग़रीबी और गुलामी दोनों का मुख्य कारण बना। भारत की दासता के मूल कारणों पर प्रसिद्ध अरब यात्री अलबरुनी ने लिखा है–

भारत बहुत छोटे-छोटे राज्यों में विभक्त है। सब राज्य स्वतन्त्र हैं और आपसी युद्ध में प्रवृत्त रहते है। जाति भेद का द्वेषभाव इतना फैल रहा है कि वैश्यों, शूद्रों और स्त्रियों को वेद पाठ करते देखकर ब्राह्मण उन पर तलवार लेकर टूट पड़ते हैं। उन्हें राजकचहरी में उपस्थित करते हैं। जहाँ उन की जिह्वा काट ली जाती है। हिन्दू बालायें सती कर दी जाती हैं। हिन्दू किसी देश के नहीं जाने जाते। किसी जाति से स्नेह सम्बन्ध नहीं रखते।

8. मुहम्मद गौरी और तैमूर लंग के आक्रमण

बेटी कृष्णा! दादी ने एक ठण्डी आह भरते हुए कहा–दुर्भाग्य का यह चक्र यहीं समाप्त नहीं हुआ। मुहम्मद गौरी के आक्रमण के पश्चात् यहाँ कुतबुद्दीन ऐबक और उसके वंशज पठानों ने 300 वर्ष तक राज्य किया। हज़ारों मन्दिर तथा बौद्ध विहार नष्ट किये गये। उनकी अतुल धन राशि को लूट लिया गया। इन्हीं पठानों के राज्यकाल में 1398 ई. में लंगड़े तैमूर ने हमारे देश पर आक्रमण किया। उसने अपने सैनिकों को बुलाकर कहा।

आप जानते हैं कि हिन्दुस्तान के आदमी बुतपरस्त-काफिर हैं। ख़ुदा और रसूले ख़ुदा की आज्ञा है कि ऐसे काफिरों को क़त्ल करो। मेरा इरादा हिन्दुस्तान पर जहाद की चढ़ाई करने का है।

बस फिर क्या था, सब लोग चिल्ला उठे—आमीन अल्लाह तैमूर और उसके मदान्ध सैनिकों ने इस देश को बुरी तरह से लूटा। भटनेर में उसने एक घण्टे में 10000 हिन्दुओं को मरवा डाला। लाखों को बन्दी बना लिया।

9. पानीपत के युद्ध

दादी की आँखें डबडबा आई थीं। कृष्णा भी अधीर हो उठी। फिर दोनों ने किसी प्रकार अपने को संभाला। कृष्णाा ने जिज्ञासा की—तो दादी जी! पानीपत की तीनों लड़ाइयों में भी हमें इसी कारण से मार खानी पड़ी? निस्संदेह मेरी बेटी! धार्मिक अन्ध-विश्वासों से जर्जरित ऐक्य के अभाव में विशृंखलित और धर्म के नाम पर सर्वनाशकारी मान्यताओं की अपनी ही बनाई बेड़ियों में क़ैद इस महान् राष्ट्र को जो कोई आया ठुकराता हुआ चला गया। पानीपत की पहली लड़ाई राणा सागा और बाबर के बीच हुई। बेटी तुझे तो पता है कि जब बाबर की सेना जी तोड़ चुकी थी और भागने को ही थी बाबर ने जहाद का नारा लगाकर मुसलमानों के एकमात्र धर्म ग्रन्थ क़ुरान के हाथ में लेकर सैनिकों के शपथ दिलाई और हारी बाजी को जीत में बदल लिया, धार्मिक एकता ने धार्मिक अनैक्य और भेदभाव पर विजय पाई।

पानीपत की दूसरी लड़ाई हेमू और अकबर के बीच 1556 ई. में हुई। इसमें हमारी हार का मूल कारण थी जातिभेद की यह विनाशकारी वृत्ति—हेमू तो बनिया है वह हमारा सेनापति कैसे हो सकता है? शत्रुओं ने हमारी कमजोरी का लाभ लेकर सेना में इस दूषित वृत्ति को फैला दिया और देश हेमू जैसे एक उद्भट वीर की सेवाओं से लाभ नहीं ले सका। बेटी कृष्णा! दादी का कहना जारी था—पानीपत की तीसरी लड़ाई अहमदशाही अब्दाली और पेशवा बाला जी बाजी राव के बीच थी। इतिहास साक्षी है कि हम निरन्तर बढ़

रहे थे परन्तु इसी बीच इसी हत्यारी ऊँच-नीच की भावना ने जाट और होल्कर को दो अलग-अलग खेमों में बाँट दिया।

इसी बीच एक घटना और हुई। एक रात्रि अहमदशाह अब्दाली जब चिन्तित घूम रहा था तो उसने देखा कि मराठों के पड़ाव की ओर बड़ा उजाला हो रहा है। पूछने पर उसे ज्ञात हुआ कि सेना अपना भोजन बना रही है। ये लोग एक दूसरे का छुआ भोजन नहीं खाते, इसलिए सभी अपने-अपने खेमों के सामने भोजन बनाने में लगे हैं। यह उजाला उसी का है। अहमदशाह अब्दाली का मानो विजय सूत्र मिल गया। निरन्तर की पराजयों से परिश्रान्त उस का चेहरा खिल उठा। अपनी सेना को सम्बोधित करते हुए उसने कहा कि एक ऐसी सेना को जिसका हर एक सिपाही एक दूसरे से विमुख हो और इस तरह से एक दूसरे का शत्रु हो उसे हराना कौन बड़ी बात है? बस दूसरे दिन अहमदशाह अब्दाली की फौज के जौहर और अपनी फूट के कारण मराठा सेना बुरी तरह भाग निकली ओर इस हार के बाद आर्य हिन्दू राष्ट्र के निर्माण का स्वप्न ही ढह गया।

दादी जी, आप ने आज मेरी आँखें खोल दी हैं। देश की गुलामी और ग़रीबी का असली कारण कहीं आज में समझ सकी हूँ। परन्तु दादी जी, देश के पतन और गुलामी के कारणों में हमारी चरित्रहीनता भी एक बड़ा कारण रही है। अब आप कृपा कर हमारे चरित्र नाश के कारण भी थोड़े से में समझाइये। कृष्णा ने कृतज्ञता भरे स्वर में कहा। बेटी कृष्णा! दादी मानो इस प्रश्न के उत्तर में अब तक सम्पूर्ण वार्ता को संक्षेप में दुहराने लगी थीं—

महाभारत काल और उससे कुछ पूर्व से ही धर्म के नाम पर अधर्म को गले लगाकर हमारा राष्ट्रीय पतन आरम्भ हो गया था। योगिराज श्रीकृष्ण ने खण्ड-खण्ड भारत को फिर एक बार महाभारत बनाने का प्रयत्न किया। उससे कुछ समय के लिए राष्ट्र संभला भी किन्तु शीघ्र ही वर्णाश्रम धर्म के शुद्ध स्वरूप में विकार आ जाने से राष्ट्रधर्म की भावना ही मर गई। राष्ट्र मुकुट ब्राह्मण विद्या और चरित्र में गिर गया किन्तु उसे अपनी पूजा-प्रतिष्ठा को कायम रखना था। अतः गुरुडम और अन्धविश्वासों की सृष्टि हुई। धर्म के

क्रोड़ में अनेक पापाचार पलने लगे जिसकी प्रतिक्रिया बौद्ध और जैन मत के रूप में सामने आई। हिंसा और जातिभेद के बाहरी लक्षण कुछ कम हुए पर बौद्ध निष्क्रियवाद ने राष्ट्र को निःसत्व और निर्जीव बना दिया। कुमारिल भट्ट और आदि शंकराचार्य ने बौद्ध मत के अनीश्वरवद का तो सामना किया किन्तु बौद्धमत के अन्य दुष्परिणामों को वे न रोक सकें। धर्म में सस्तेपन की होड़ आरम्भ हुई। बुद्ध और महावीर इन दो क्षत्रिय राजकुमारों के मुकाबिल में श्रीराम और श्रीकृष्ण इन दो क्षत्रियों की मूर्तियों की पूजा हुई। ठाकुर पूजा चली।

10. अवतारवाद

दयानन्द खोल गये पाखण्डियों की पोल़।
व्यर्थ में पीट रहे अवतारवाद का ढोल।।
ईश्वर कभी जन्म-मरण के बन्धन में नहीं आता।
इसको कोई क्यों नहीं समझ पाता।। **लालचन्द चौहान**

परमेश्वर के स्थान पर जब इन मूर्तियों की पूजा आरम्भ हो गई तो उन्हें ईश्वर सिद्ध करने के लिए ईश्वर भी माँ के गर्भ में आकर जन्म लेता है, अवतारवाद का यह महा निकम्मा, तर्क-शून्य और चरित्रनाशक सिद्धान्त घड़ा गया। 24 अवतार बना डाले गये जिनमे कच्छप (कछुआ) और वाराह (सुअर) के अवतार भी शामिल हैं। अपने घोर से घोर पापों को छिपाने के लिए श्रीकृष्ण आदि महापुरुषों को एक ओर परमेश्वर बताया गया है तो दूसरी ओर शर्म को शरमाने वाली पाप की कहानियाँ उनके पवित्र जीवनों के साथ जोड़ दी गई। क्योंकि अब कहा जा सकता था कि अब भगवान् ही दानलीला, मानलीला चीरहरण लीला, माखनचोरी लीला के रूप में चोर जार शिखामणि बनकर चोरों और व्यभिचारियों के सरदार बन सकते हैं तो हमारे ऐसा करने में क्या दोष है? महापुरुषों का किसी देश और जाति को सबसे बड़ा लाभ यह होता है कि राष्ट्र की भावी पीढ़ियां उनसे प्रेरणा और प्रकाश

लेती हैं । महापुरुष राष्ट्र के प्रकाश-स्तम्भ होते हैं । परन्तु जब उन्हें ईश्वर बना दिया जाता है तो यह बड़ा लाभ खत्म हो जाता है ।

महापुरुषों के जीवन से जब कभी कसी बात की मिसाल दी जाती है तो हम सोच लेते हैं कि अमुक काम तो वही कर सकते थे वे ईश्वर थे हम साधारण लोग ऐसा काम कैसे कर सकते हैं ? तो हर अच्छे और ऊँचे काम से छुट्टी पाने का बहाना और हर नीच काम का समर्थन अवतारवाद की आड़ में हमें मिलने लगा । रही सही कसर मिथ्या महात्म्यों और कलियुग केवल नाम अधारा की मान्यता ने पूरी कर दी । कैसा भी पाप करो पहले तो कलियुग के मत्थे मढ़कर ही छुट्टी फिर यम द्वितीया के दिन यमुना में नहा लो सारे गुनाह माफ ! दशहरे के दिन नीलकण्ठ के दर्शन से 21 पीढ़ियाँ तर जावेंगी । गंगा में नहाने, गंगाजल स्पर्श करने और गंगाजल के दर्शन का तो अपार पुण्य है ही 400 कोस या 800 मील से ही गंगा-गंगा कहने से भी सारे पाप नष्ट हो जाते हैं । पाप की खुली छुट्टी का कैसा बढ़िया लाइसेन्स है ।

यह ! पाप से रोकने के लिये नहीं, पाप के परिणाम से बचने के लिये गुरुपूजा, तीर्थयात्रा, श्राद्ध, व्रत उपन्यास इन उत्तम बातों को भी ऐसे भ्रान्त रूप में पेश किया गया जिससे पाप और दुश्चरित्रता को खूब बढ़ावा मिला । खान-पान, आचार-व्यवहार की अब कोई मर्यादा नहीं रह गई । हर पाप का समर्थन करने के लिए एक नया देवता चढ़ लिया जाता था किसी पुराने देवता के मत्थे ही कोई कथा घड़ कर उसे चपेक दिया जाता । देवताओं की नुमायश ही लग गई । इस नुमायश का हर देवता किसी न किसी पाप का समर्थन कर रहा था ब्रह्मा अपनी लड़की से व्यभिचार का पार्ट अदा कर रहे थे तो शिवजी इन्द्रिय पकड़े ही भागे जा रहे थे । कृष्ण जी के दगीलेपन का तो कहना ही क्या है ? कोई देवता शराब पी रहा है तो कोई माँस खा रहा है और कोई भाँग छानने में लगा है । गरज यह दुनियाँ का शायद ही कोई ऐसा पाप हो जो देवताओं की इस नुमायश में न देखा जा सके ।

बेटी कृष्णा ! दादी एक आवेशपूर्ण मुद्रा में कहे जा रही थीं—इन देवताओं के नाम पर दुकानें सजाई गई । हर दुकान का विज्ञापन बोर्ड तैयार

हुआ। एकदम नई कल्पनायें होने पर भी इनका नाम पुराण रखा गया। देवताओं के नाम पर प्रायः इनके नाम थे। जैसे भागवत् पुराण, स्कन्द पुराण आदि। वेद के परम पवित्र काव्यमय अलंकारिक वर्णनों के रूढ़ अर्थ करके मनमानी कथायें घड़ी गईं। हर दुकान का यह विज्ञापन बोर्ड अपने-अपने ढंग से सूरदास जी के शब्दों में कहता था–

और देव सब रंक भिखारी, त्यागे बहुत अनेरे

सब ओर से यही आवाज़ थी–आओ, हमारा देवता सब से ऊँचा है। उसमें शाप एवं वरदान की अनन्त शक्तियाँ हैं। इन्द्रिया की तृप्ति के हमारे यहाँ बड़े गोपनीय और परिष्कृत साधन हैं। हर पाप के सस्ते से सस्ता प्रायश्चित हमारे पास है। आओ हमारे देवता की सजावट और शृंगार देखो, निहाल हो जाओगे–आदि। और इस गोरखधन्धे का नाम रखा गया– सनातन धर्म।

11. विचित्र सनातन धर्म

बेटी कृष्णा! दादी का गला भर आया था। किसी प्रकार उन्होंने अपने को संभालते हुए कहा–मेरी अच्छी बेटी! क्या कहूँ मैं अपने प्यारे देश की दुर्भाग्य-कहानी? सनातन धर्म कहते हैं–अपरिवर्तनीय न बदले जाने वाले अटल नियमों को। वेद की भाषा में ऋत को सनातन कहते हैं। वेद का सनातन धर्म विश्वधर्म, सार्वभौम धर्म, अखिल मानव धर्म था, और है। परन्तु यह तथाकथित सनातन धर्म ऐसा विचित्र था जिसकी छाया में हमारा सब कुछ बदल दिया गया। हमारा नाम बदल गया। आर्य इस प्रभुप्रदत्त श्रेष्ठता और उच्चता के प्रतीक शुभ नाम की जगह हमें हिन्दू नाम मिला और हमारे प्यारे आर्यावर्त या भारत देश का नया नामकरण हुआ–हिन्दुस्तान। परन्तु हम सनातन धर्मी बने रहे।

हिन्दू शब्द का वेद से लेकर उपवेदों वेदांगों, छहो शास्त्रों, महाभारत, गीता, रामायण आदि में कहीं पता नहीं। अरबी भाषा का यह शब्द है जिसका

अर्थ है—काफिर, जाहिल, चोर, लुटेरा, हत्यारा आदि। मुस्लिम शासन की यह देन सनातन धर्म का हृदय हार बन गई और गुलामी के इस तोहफे को आज भी हम शान से लटकाये फिरते हैं। सनातन धर्म की छाया में हमारा प्रभु बदल गया। एक परमेश्वर की जगह ढेरों परमेश्वर आ खड़े हो गये। परमेश्वर की ऐसी भरमार हुई कि यहाँ का हर निवासी ही ईश्वर न बैठा। जिधर देखो उधर अहं ब्रह्मस्मि का घंटा नाद होने लगा। इन ईश्वरों ने अपने ही पूजा पाठ के फन्दे में इस देशवासियों को इतना उलझाया कि उन्हें देश, जाति और समाज का कुछ पता ही न रहा। जिस समय देश में यवन साम्राज्य का सूर्य तप रहा था, देश के एक सिरे से दूसरे सिरे तक दिल्लीश्वरोवा जगदाश्वरोवा की धूम थी, हिन्दी साहित्य के इतिहास में उसे भक्तिकाल के नाम से पुकारा गया। ओह! यह कैसा विचित्र सनातन धर्म था। जिसमें प्रभु के बदलने के साथ प्रभु का रूप भी बदला गया। जो भक्ति शक्ति संचार करती है, राष्ट्र जीवन की जो अपनी किल्ली है। राष्ट्रिय भावनाओं को जो अपनी सोम सुधा से सींचती है, जिसकी हरियाली प्राणों में नई चेतना और नेत्रों को दूर तक देखने की शक्ति देती है वह भक्ति कायरता, नपुंसकता और हिजड़ेपन की निशानी बनकर रह गई। तभी न देश की घोर गुलामी के काल को भक्तिकाल कहा गया।

हाँ, हाँ मुझे याद आया बेटी! दादी ने अपने आँचल से नयनों की भीगी कोर को पोंछते हुए कहा—भक्ति के नाम पर यहाँ सखी सम्प्रदाय भी बना। पुरुष जिसमें स्त्री का, हिजड़े का रूप बना कर रहते थे। वैदिक भक्ति की जगह पर तथाकथित सनातन धर्म की बदली हुई भक्ति कैसी अनौखी थी। भक्ति के साथ ही हमारे धर्म ग्रन्थ बदले। एक वेद की जगह पुराण आदि अनेकों धर्म-ग्रन्थ हो गये। गुरु मन्त्र बदला, एक गायत्री की जगह विचित्र तरीके के अनेकों अर्थ हीन ऊल-जलूल गुरुमन्त्र आ विराजे। यज्ञ, तीर्थ, तप, दान, व्रत, उपवास, गो, ब्राह्मण पूजा, गुरु पूजा सबका अर्थ बदले। जो गुरु कभी कहते यानी सुचरितानि तयो सेवितव्यानि नो इतराणि अर्थात् हे शिष्य! जो हमारे सुचरित हों उन्हीं का आचरण करना, इतर (अन्य) का नहीं। वे गुरु

कनफुकवे गुरु बन गये। काना बाती कुरु, तू चेला मैं गुरु—कि सत्य वचन महाराज का क्रम गुरु दीक्षा का बदला हुआ रूप हो गया।

इतना ही नहीं, हमारा अभिवदन भी बदला। नमस्ते हमारे इस भावपूर्ण सनातन राष्ट्रिय अभिवादन की जगह सैकड़ों और हज़ारों तरह के अभिवादन चल पड़े जो खड़े होकर चिल्ला-चिल्ला कर विदेशी आक्रमणकारियों का आह्वान कर रहे थे कि आओ, हम सब खण्डित और बँटे हुए हैं। आओ, हमें लूटो और गुलाम बनाओ। इस स्थिति में ''कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'' —सारे संसार को आर्य बनाओ—हमारा यह राष्ट्रिय घोष भी बदल गया और उसके साथ ही दिग्विजय के स्वप्न भी तिरोहित हो गये। नये नारे शुरू हुए। समुद्रयात्रा करना पाप है, चौके से बाहर खाना पाप है। और इनके तनिक भी विरुद्ध चलने वालों को जाति बहिष्कार की व्यवस्था कर दी गई। आर्य जाति एक ऐसा हौज बन गई जिसकी पानी भरने वाली टोंटी बंद थी किन्तु पानी निकलने वाली नाली खुली थी। एक ऐसा स्कूल जिसमें एक भी नया विद्यार्थी प्रवेश नहीं पा सकता था परन्तु जिस में से रोज धक्के मार-मार कर विद्यार्थी निकाले जाते थे। दादी का अन्तर कराह उठा था। वह कहती जा रही थी—

बेटी यह सब तो बदला ही पर मुझे यह कहते हुए रुलाई आती है कि इस विचित्र सनातन धर्म की छाया में हमारे पूर्वज भी बदल गये। सचमुच यह कहते-कहते दादी तो रो पड़ी। कृष्णा भी मुश्किल से अपने को रोक सकी। उसने दादी को पंखा झुलाना आरम्भ किया। इस बीच दादी ने अपने को संभाल लिया था। उन्होंने तनिक आवेश के स्वर में कहना आरम्भ किया—हज़ारों नहीं लाखों नहीं करोड़ों की संख्या में हमने अपने लाल दूसरों को गोदियों में बलात् फेंक दिये। पता नहीं कितने काला चाँद और काश्मीर के जमोरिन अपने ही हाथों बना दिये। वहाँ दूसरों के घर में पहुँचते ही उनके लिये इस देश की धरती और आसमान बदल गये। गंगा-यमुना सिन्ध, ब्रह्मपुत्र, कावेरी, कृष्णा और नर्मदा बदल गई। हिमालय और विन्ध्याचल बदल गये। इतना ही नहीं राम और कृष्ण बदल गये। अब वे रामदत्त से अल्लादीन बन गये थे।

परन्तु ब्रह्म सत्यं जगत्मिथ्या का पाठ रटने वाले इन ईश्वरों को अपने-पराये की तमीज क्यों होने लगी? यही नहीं अपने बनाये अनगिनती देवताओं के होते हुए भी हमने मुसलमानों के ताजिये, क़ब्र, पीर, पैग़म्बर और औलियाओं पर श्रद्धा के फूल चढ़ाये। कैसा अद्‌भुत आतिथ्य था वह! मुसलमान के बाद जब ईसाई आया तो उसके बगुला रूप पर तो हम और भी मोहित हो गये। ईसाई पादरी का सफेद लिवास, लम्बीदाड़ी, चेहरे की मुस्कान, मीठी बोली, शिष्ट व्यवहार हाथ में तसवीह और दवाई का झोला—कैसा मोहक रूप था यह। सियाराममय सब जग जानी की माला फिराने वाले हम लोग पुकार उठे—आओ भैया, आप कितने अच्छे हो। सचमुच आप बहुत अच्छे हो सेवा के अवतार हैं आप तो। भैया तुम यहीं बस जाओ, बोलो तुम क्या चाहते हो? केवल भारत से कुछ चीजों का व्यापार। उनका उत्तर था केवल इतना ही यह भी कुछ मांगना हुआ, हमारा आग्रह था। और ईसाई अंग्रेज व्यापारी हमारा शास और भाग्य-विधाता बन चुका था।

ईसाई की लड़ाई आमने सामने की नहीं थी। उसने शीत युद्ध आरम्भ किया राष्ट्रवृक्ष को दीमक के रूप में वह लग गया और इसे भीतर से पोला करने लगा। मैकाले की चाल चल गई। अंग्रेज़ी शिक्षा और अंग्रेज़ीयत के प्रवाह से उस विचित्र और कल्पित सनातन धर्म की मान्यता के कगार ढहने लगे। ईसाई शास्त्रार्थ के लिए चैंलेज करता तो उधर कोई उत्तर न था। नतीजा साफ था। औरंगजेब की तलवार जो काम न कर सकी अंग्रेजियत ने वह कर दिखाया। सिरों से चोटिया और गलों से यज्ञोपवीत अब बिना प्रयास के ही उतर रहे थे। बगुला पादरी वहाँ पहुँचा जिन्हें हमने भुला दिया था, उपेक्षित किया था, तिरस्कृत किया था। उस ने उन्हें चुमकारा और अपनी गोद में बिठा लिया। देखते-देखते ईसा की भेड़ों में लाखों जीते-जागते इन्सान शामिल हो गये। विचित्र अतिथि सत्कार के कायल हम कैसे बोलते। आतिथ्य के ज्वरावेग में हम चिल्ला पड़े—लो हमारी जाति के ये एक करोड़ लाल तुम भी लो।

बेटी, तुझे क्यों कर बताऊँ कि विचित्र सनातन धर्म की छत्रछाया में

हमारा इतिहास भी बदल गया। कहा गया आर्य यहाँ के मूल निवासी हैं। और आज अंग्रेज़ के चले जाने के बाद भी उस कथित सनातन धर्म की छाया में किया गया वह पाप आँख में तकुवे के घाव की तरह भारत राष्ट्र के शरीर को साड़ रहा है। हमारे त्यौहार और पर्व भी जो राष्ट्र-जीवन के शक्ति स्रोत थे घिनौने और पापपूर्ण बना दिये गये। दादी ने घड़ी की ओर देखा तो पौने तीन बजे थे। अपनी बात को समेटते हुए कृष्णा की ओर देखते हुए वे बोलीं—बेटी, अब केवल 15 मिनट में मैं आज की चर्चा खत्म कर दूंगी। देखो बिटिया इस प्रसंग की अन्तिम बात यह है कि राष्ट्र जीवन की आधार नारियाँ हैं उनका रूप भी बदल गया। उनकी गौरव और सम्मानपूर्ण स्थिति को भी इस कल्पित सनातन धर्म की भेंट चढ़ा दिया गया। बेटी कृष्णा इस बात को विस्तार से समझने के लिए मैं तुझे प्रसिद्ध लेखिका चन्द्रावती लखनपाल की लिखी हुई ''स्त्रियों की स्थिति'' नामक पुस्तक दूँगी। उसे पढ़कर तू समझ सकेगी कि वैदिक काल में स्त्रियों की कैसी सम्मानपूर्ण और उच्च स्थिति थी। ऋषियों की भाँति उस समय में अपाला, घोषा आदि कई ऋषिकायें भी हुई हैं। महिला रत्न गार्गी आदि स्त्रियाँ सभाओं में शास्त्रार्थ करती थीं और लीलावती आदि की तरह विद्याओं की पण्डिता होती थीं परन्तु इस कथित सनातन धर्म में इसी मातृशक्ति को पैर की जूती माना गया, नरक का दरवाजा कहा गया। ''सहज अपावन नारि, अधम ते अधम'', ''अधम ते नारी'' तथा ढोल गंवारि शूद्र पशु, नारी, ये सब ताड़न के अधिकारी आदि घृणा सूचक शब्दों में याद किया गया।

परिणामतः नारी को एक निर्जीव वस्तु की तरह पर्दे में ढक, दिया गया। बाल विवाह और वृद्ध-विवाह के पाप जारी हुए। भ्रूण हत्यायें की गई। विधवाओं की दुर्दशा का तो कोई वारापार ही नहीं रहा। अनेक तरह के अन्धविश्वासों में यहाँ के नारी समाज को जकड़ दिया गया। आयुर्वेद शास्त्र की जगह भोपा स्याने दिवाने, गण्डे ताबीज, पीर सैयद, मसानी द्वारा चिकित्सा चली। भैंरो काली और चामुण्डा की पूजा चली। भैंसों, बकरों के बलिदान आरम्भ हुये। ज्योतिषशास्त्र ज्ञान की एक दिव्य शाखा है उसकी जगह फलित

ज्योतिष का कुचक्र चला। जन्मपत्री और कुण्डली निर्माण का एक नया धन्धा चला। नागाओं और मुष्टण्डों की पूजा चली। इनके नाम पर अनेकों मेले-ठेले चले। स्त्रियाँ ही मुख्य रूप से इन सब का शिकार बनाई गई। इस तरह नारी को सम्पूर्ण सामाजिक अधिकारों और गौरवमय जीवन से वंचित करके वस्तुतः आगे आने वाली पीढ़ियों को लंगड़ा और जीवनशून्य बना दिया गया। आखिर जिस देश की मातायें ऐसी दलित-पलित और दुर्भाग्यग्रस्त हों उनकी सन्तानें क्यों कर सबल और स्वाभिमानी हो सकती थीं। नारी अपमान के रूप में राष्ट्र का पाया ही हिल गया, अन्यथा 40 करोड़ भेड़ों को भी कुछ हजार गड़रिये नियंत्रित कहाँ रख सकते हैं?

बेटी कृष्णा! दादी अब अपनी बात के उपसंहार की ओर जा रही थी। वे कह रही थीं—सनातन का अर्थ है न बदलने वाला। सनातन धर्म का मतलब है न बदलने वाली सच्चाइयाँ। दो और दो मिलकर चार होते हैं। यह एक न बदलने वाली सच्चाई है। हज़ारों वर्ष पहले भी, आज भी और आगे भी यह सच्चाई इसी रूप में बनी रहेगी। तो इसी तरह परमात्मा है, आत्मा है, प्रकृति है। यह त्रैतवाद एक सच्चाई है। प्रकृति केवल सत् है, जीवात्मा सत्चित् है और परमात्मा सच्चिदानन्द स्वरूप है। यह एक सच्चाई है। आनन्द की कमी है जीवात्मा में और वह एकमात्र आनन्द के भण्डार परमात्मा से ही मिल सकेगा। प्रकृति को साधन बनाकर (उसे त्याग कर या झुठलाकर नहीं) परमात्मा की प्राप्ति जीवात्मा का लक्ष्य है, यह एक सच्चाई है। जीवात्मा कभी परमात्मा नहीं बन सकता—जैसे लोहा कभी अग्नि नहीं बन सकता।

हाँ, अग्नि के सम्पर्क में लोहा अग्निवत् हो जाता है। परन्तु आग से अलग होते ही फिर लोहा ही है, इसी तरह परमात्मा के न्याय आदि गुणों को धारण करना ही परमात्मा की उपासना है। परमात्मा की आज्ञा का पालना, यज्ञ-भावना, दूसरों को सुखी बनाना ही सुख शान्ति की कुंजी है—यह एक सच्चाई है। परमात्मा की तरह प्राणिमात्र को स्वात्मवत् समझकर सबको प्यार देना ही परमात्मा का प्राप्त होना है। परमात्मा जन्म नहीं लेता। जीवात्मा अपने में ईश्वरीय गुणों का विकास करके ईश्वरत्व को प्राप्त कर लेता है।

ऐसा पुरुष युग पुरुष या महापुरुष होता है । शक्ति के केन्द्र प्रभु के सम्पर्क में होने से जन-जन को अपना आत्मीय समझने से उसमें अपार शक्ति आ जाती है । वह यज्ञ के लिये अर्थात् राष्ट्र के लिये अपना जीवन लगाकर सबकी पूजा का पात्र बन जाता है । युगों तक राष्ट्र उससे प्रेरणा और प्रकाश लेता है ।

एक पिता के पुत्र की तरह सभी आपस में भाई-भाई हैं, समान हैं, यह सच्चाई है । प्रत्येक व्यक्ति का जीवन अपने लिये ही न होकर वह समाज और राष्ट्र के लिए भी हो । साथ ही हर व्यक्ति का स्वभाव, शक्ति और योग्यता अलग-अलग होती है । इसी आधार पर निर्मित वर्णाश्रम धर्म के अनुसार स्वधर्म अर्थात् अपने-अपने आश्रम और वर्ण के अनुसार अपने प्रति, परिवार, समाज, राष्ट्र, निखिल विश्व और प्राणिमात्र के प्रति अपने-अपने कर्त्तव्य का पालन ही सच्ची प्रभु भक्ति है । यम, नियम आदि अष्टांगयोग तथा मनु वर्णित –धृति, क्षमा, दमोऽस्तेयं ..... आदि धर्म के दश लक्षणों का अनुष्ठान इसी कर्त्तव्य भावना को शक्ति देने के लिए है । यह है सरल–सत्य मानव धर्म सार्वभौम धर्म, विश्व धर्म, वेद धर्म या सनातन धर्म । ये शाश्वत सचाइयाँ हैं, अटल और न बदले जाने वाली सच्चाइयाँ ।

परन्तु इस अभागे राष्ट्र पर एक नया कल्पित सनातन धर्म लादा गया जिसमें प्रभु की मान्यता का रूप, प्रभु भक्ति का रूप, हमारे अभिवादन का प्रकार, हमारे त्यौहार और पर्वों का स्वरूप, हमारा इतिहास? हमारी रीति नीतियाँ यहाँ तक कि हमारे पूर्वज और मातृ-सम्मान भावना यह सब कुछ बदल गया, बदल जाता रहा और हम थे कि सनातन धर्म की जय बोलते रहे । एक ओर यह सब होता रहा दूसरी ओर मूतिपूजा जन्मगत जाति-पाँति, छुआछूत, पोपवाद, अवतारवाद, बहुदेवतावाद, गुरुडम और अन्धविश्वास के क्रोड में नपुंसकता, दुश्चरित्रता, विलासिता आपसी फूट और ज्ञान-विज्ञान से रहित मूढ़ता के कीटाणु पलते रहे, पनपते रहे । परिणाम छिपा नहीं है । हमारे सर्वनाश–भयंकर पतन ओर युगों लम्बी गुलाी ने अपनी सर्वभक्षी बाहों में हमें लपेट लिया मेरी बेटी, बहुत से संक्षेप में यही सब हमारे इस महान् भारत के पतन, गुलामी और ग़रीबी के मूल कारण हैं ।

इस सारे बीच में कृष्णा अपनी प्यारी दादी की बुद्धि, तर्कना और विचार शक्ति पर मन ही मन निहाल हो-हो जाती थी। अपनी दादी के कथन की समाप्ति पर बड़े ही कृतज्ञ भाव से वह बोली—दादी जी, यों आपने क्या नहीं दिया अपनी बेटी को आज तक। इस शरीर का रोम-रोम आप के ही प्यार और दुलार का प्रतिमान है। मेरी पूज्या दादी जी! आप ने आज जो कुछ दिया है, वह अमर वस्तु है। आपने अपनी पोती को ज्ञान-नेत्र, नहीं-नहीं विज्ञान-नेत्र देकर अपनी दादी संज्ञा को सार्थक कर लिया है। अच्छा, अच्छा बहुत बातें न बना। तू तो बहुत बातें करना सीख गई कृष्णा? अच्छा देखूँ तो कि तूने समझा क्या है? बेटी कृष्णा जरा सुना तो सही कि भारत राष्ट्र के पतन के मूल कारण क्या है? और कृष्णा सुनाने लगी— (1) इस विश्व सम्राट् भारत की गुलामी का कारण थी आपस की फूट, परन्तु इसका मूल कारण थी जन्मगत जाति-पाँति, छुआछूत और बहुदेवतावाद की धर्म के नाम पर अधर्ममयी मान्यता। फूट या एकता के अभाव के मूल कारण थे अनेक देवता, अनेक धर्म ग्रंथ, अनेक गुरु ग्रंथ, अनेक पूजा पद्धतियाँ, तिलक छापे आदि।

इस जगत् गुरु भारत के पतन का कारण था—राष्ट्रधर्म की भावना का अभाव और इसका मूल कारण था बौद्ध निष्क्रियवाद तथा शंकर अद्वैतवाद। (3) इस महाभारत के महा पतन का कारण थी विलासिता और चरित्रहीनता और इसका मूल कारण थी मूर्तिपूजा और अवतारवाद की चरित्रनाशक मान्यताएं। (4) हमारे प्यारे भारत की गुलामी का कारण था नई युद्ध सामग्री का अभाव और इसका मूल कारण था यह दोष पूर्ण विचार कि हमें कुछ नहीं करना, मूर्ति हमारी रक्षा कर लेगी। इस महान् राष्ट्र के अचिन्तनीय पतन का कारण थी संकीर्णता और उसका मूल कारण थी—गुरुडम, अन्धविश्वास, नारी जाति के प्रति सम्मान का अभाव, फलित ज्योतिष आदि के नाम पर पलने वाली मूढ़तापूर्ण मान्यतायें। (5) इस स्वर्णमय भारत की दरिद्रता का कारण थी विदेशी लुटेरों द्वारा अनेकों बार की लूट। परन्तु इस का मूल कारण थे हमारे मन्दिर देवालय, जिनमें राष्ट्र की सम्पूर्ण सम्पत्ति आकर इकट्ठी हो गई थी और जिनके साथ शाप और वरदान की अनेकों विचित्र कथाएं जुड़ी थी।

यह कहते कृष्णा अपनी दादी से लिपट गई। बोली, दादी आप की पोती कुछ समझ सकी है या नहीं। इस छोटी सी अवस्था में अपनी पोती की ग्रहण शक्ति और बुद्धि चातुर्य को देखकर दादी तो अवाक् रह गई। उन्होंने प्रेम से अपनी पोती का माथा चूम लिया और फिर कुछ देर तक एकटक प्रेम भरी निगाहों से उसकी ओर देखती रही। कृष्णा ने जब मौका पाया तो मधुर शब्दों में अपनी दादी के प्रति पूर्ववत् फिर कृतज्ञता प्रकाशित करने लगी।

ज्यों-ज्यों कृष्णा दादी के प्रति कृतज्ञता प्रकट कर रही थी त्यों-त्यों दादी की आकृति अधिकाधिक करुणाद्र होती जा रही थी। परन्तु कृष्णा का ध्यान उधर नहीं था। वह कहे जा रही थी—आज आप के चरणों में भारत के इतिहास को मैंने उसके सही रूप में पढ़ा है। कॉलेज के वातावरण में, पाश्चात्य विचारों के प्रवाह में मैं तो धर्म और प्रभु को ही एक बखेड़ा और जंजाल समझ बैठी थी। परन्तु आज यह भ्रान्ति भी बहुत कुछ दूर हो गई। आज मैं समझ सकी हूँ कि सच्चा धर्म तो बहुत ऊँची चीज है। वस्तुतः धर्म के नाम पर अधर्म तथा ईश्वर और प्रभु भक्ति के नाम पर पाखण्डवाद ही हमारे कष्टों और दुर्गति का मूल कारण है। अब मैं अपना सारा जीवन भारत के पतन के इन मूल कारणों को मिटाने में लगाऊँगी। आप के इस उपकार को मैं कभी न भूल सकूंगी, दादी जी। यह क्या इस अन्तिम वाक्य के समाप्त करते-करते जब कृष्णा ने सिर उठाया तो देखती क्या है—दादी जी की करुणा तो आँखों के रास्ते आँसुओं के रूप में चू पड़ी हैं। दादी ही तो रो रही थी। कृष्णा के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। बोली—दादी जी आप को क्या हुआ? क्या मुझसे कोई अभद्र व्यवहार हो गया। क्षमा करिये, मेरी दादी जी।

दादी ने अपने आँसुओं की उमड़ती धारा को किसी प्रकार रोकते हुए एक बार फिर अपनी पोती को प्यार किया। वे कहने लगीं—तेरा जैसी बुद्धिशीला और सौम्या पुत्री से कोई अभद्र व्यवहार क्यों कर होने लगा, बेटी? मेरे ये आँसू हर्ष के आँसू है, कृतज्ञता के आँसू हैं। तू मेरे प्रति कृतज्ञता प्रकट कर रही है, परन्तु तू नहीं जानती बेटी, कि इस कृतज्ञता का वास्तविक पात्र कौन है। दादी ने कृष्णा की ओर प्रश्न भरी निगाह से देखा और तभी अपने

कमरे में लटकी हुई एक तस्वीर की ओर संकेत करके वह बोली—बेटी, तू जानती है, यह तस्वीर किसकी है ? क्यों नहीं दादी जी, आप ने ही तो एक बार बताया कि यह महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का चित्र है ।

12. देव दयानन्द की अपार दया

'ठीक-ठीक' दादी हर्ष विभोर हो चिल्ला पड़ी ''ठीक है मेरी बेटी'' । दयानन्द—दया और आनन्द से परिपूर्ण ! कितना प्यारा नाम है, बेटी कृष्णा यह ! वह दयानन्द ही था जिसने हमें जगाया, उठाया और बचा लिया । तुझे तो पता है कृष्णा जब विचित्र और कल्पित सनातन धर्म की छाया में हमारा सब कुछ बदल रहा था । यहाँ तक कि बदलते-बदलते हम इतने बदले कि उसमें हम अपना आत्मस्वरूप ही खो बैठे थे तब दयानन्द ने ही जो कुछ हम भूल गये थे उसे फिर से याद कराया । उसने बदले को बदल कर, उलटे को उलट कर उसे उसका पहला रूप फिर से दिया । उसने अपनी ओर से कुछ भी नया न देकर भूला हुआ वेद का राज पथ हमें बताया ।

वह दयानन्द ही था जिसने एक चतुर माली के रूप में मेरे भारत के वीरान बगीचे को उजड़ने से बचा लिया । वह दयानन्द ही था जिसने एक सावधान किसान के रूप में भारत राष्ट्र की खेती को हिंसक और जंगली जन्तुओं द्वारा चौपट होने से बचा लिया । जिसने फिल्टरेशन और ई-वैपीरेशन की प्रक्रिया द्वारा शुद्ध जल में मिले हुए कूड़े कर्कट और कीचड़ को अलग करके फिर से सच्चे धर्म का शुद्ध अमृत पिलाकर मरती हुई मानवता को जिला दिया । दयानन्द वह महान् चिकित्सक था जिसने वेद रूपी चिकित्सा शास्त्र का विधिवत् अध्ययन करके भारत राष्ट्र के रोग जर्जरित शरीर के रोग के मूल कारणों का निदान किया और उसकी सफल चिकित्सा की । चिकित्सा करते समय इस महान् सर्जन ने फाजिल माद्दे को अपने खण्डन खड़ग से काट गिराया । जहाँ जरूरत समझी वहीं बिना रोगी की चिल्लहट और गालियों की चिन्ता किए एक सच्चे डॉक्टर के रूप में साहस और वीरता के साथ हर फोड़े

का ऑपरेशन किया। इस दिव्य डॉक्टर ने अपनी ऑपरेशन चिकित्सा यहाँ से आरम्भ की–

यह आर्यवर्त्त देश ऐसा है जिसके सदृश भूगोल में कोई देश नहीं है..... पारसमणि पत्थर सुना जाता है, यह बात तो झूठी है परन्तु आर्यवर्त्त देश ही सच्चा पारसमणि है कि जिसको लोहे रूप दरिद्र विदेशी छूने के साथ ही सुवर्ण अर्थात् धनाढ्य हो जाते हैं। तथा....इत्यादि प्रमाणों से सिद्ध है कि सृष्टि से लेकर महाभारत पर्यन्त चक्रवर्ती सार्वभौम राजा आर्यकुल में ही हुए थे। अब इनके सन्तानों का अभाग्योदय होने से राज भ्रष्ट होकर विदेशियों से पदाक्रान्त हो रहे हैं।

अपने अमर ग्रंथ ''सत्यार्थप्रकाश'' मे खण्डनपरक ग्यारहवें समुल्लास के बिल्कुल आरम्भ के ये शब्द खण्डन कार्य के पीछे ऋषि दयानन्द की भावना की बोलती तस्वीर है। ये शब्द बतलाते हैं कि भारत की परतन्त्रता और पतन के मूल कारणों को कितनी गहराई से उन्होंने समझा था और कि ऋषि का मत-मतान्तरों के खण्डनयुक्त यह धार्मिक आन्दोलन राष्ट्र-जागरण का ही शंखनाद था।

दयानन्द की उपेक्षा का परिणाम

जितने अंशों में ऋषि के कार्यक्रम को अपनाया गया हम सफल रहे और जहाँ-जहाँ अपनी अदूरदर्शिता से हमने ऋषि के कार्यक्रम की अवहेलना की वहीं वहीं हमारा राष्ट्र पिछड़ गया। शुद्धि आन्दोलन वस्तुतः भारत के भारतीयकरण या मस्तिष्कों के राष्ट्रियकरण का आन्दोलन था, उसे न अपनाने का नतीजा पाकिस्तान है। आज भी नागालैण्ड, झारखण्ड आदिवासियों की समस्यायें, उत्तर-दक्षिण के झगड़े, भाषा समस्या, ईसाई मुसलमानों की अराष्ट्रीय प्रवृत्तियाँ और कम्यूनिज्म का जहर ऋषि दयानन्द के कार्यक्रम की उपेक्षा के नतीजे हैं। ऋषि निर्दिष्ट शिक्षा और संस्कृति के गौरवमय वैदिक स्वरूप को भुलाकर सह शिक्षा और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के नाम पर नौजवान लड़कियों के भद्दे नृत्य देश के चरित्र और शील को कहाँ ले जाकर छोड़ेंगे, कुछ कहा नहीं जा सकता। ''गोकरुणानिधि'' द्वारा ऋषि

दयानन्द ने गौरक्षा का अर्थशास्त्र समझाया था। परन्तु उसे भुला कर ग़रीब गाय के गले पर छुरी फेरी जा रही है। इस तरह राष्ट्रीय जीवन की क़ब्र खोदी जा रही है।

देखो बेटी! अब समय हुआ ही चाहता है इसलिए मैं आज की चर्चा को यही विराम दूँगी और फिर कभी विस्तार से ऋषि दयानन्द के उपकारों के सम्बन्ध में मैं तुझे कुछ बात बताऊँगी। आज तो तुझे इतना ही समझ लेना है कि यदि तुझे आज की चर्चा से कुछ प्रकाश मिला है तो उसके लिए कृतज्ञता का पात्र मैं नहीं, देव दयानन्द हैं और बेटी सच्चे धर्म की महिमा के सम्बन्ध में भी विस्तार से फिर कभी बताऊँगी कि जिस तरह धर्म के नाम पर अधर्म और पाप-पाखण्ड किसी भी राष्ट्र की अवनति और पतन के मूल कारण हैं उसी तरह सच्चा धर्म ही राष्ट्रोन्नति का मूल है।

देव दयानन्द और अन्य महापुरुष

एक बात और शायद तू सोचती हो कि महाभारत से अब तक लगभग 5200 वर्ष के इस लम्बे काल में ऋषि दयानन्द से पहले किसी का भी ध्यान राष्ट्र को महापतन से बचाने की ओर नहीं गया? परन्तु इस प्रश्न का उत्तर नकार में देना एक तरह की कृतघ्नता होगी। सच बात यह है कि देश और विदेश सभी जगह भारत और उसके साथ संसार भर के व्यापक पतन को रोकने के प्रयत्न हुए। हमारे देश में बुद्ध, महावीर और आदि शंकराचार्य के अतिरिक्त कबीर, तुलसी, नानक, दादू, संत तुकाराम, ज्ञानेश्वर आदि कितने ही नररत्न हुए, जिन्होंने—स्वदेश कल्याण के लिए अथक श्रम किया।

इनमें से कइयों ने मूर्तिपूजा, अवतारवाद, बहुदेवतावाद आदि पाखण्डों का तीव्रतम खण्डन भी किया। विदेशों में भी ईसा, मुहम्मद आदि ने इस दिशा में प्रयत्न किये। मुझे कहने दो बेटी, कि ये सभी अपने प्रयत्नों में ईमानदार थे और इतने भर के लिए इन्सानियत सदा इनकी ऋणी रहेगी। इनके तप त्याग और ईमानदारी पूर्ण प्रयत्नों के लिए मैं भी इनके चरणों में श्रद्धा से नत होती हूँ। दादी ने कुछ क्षणों के लिए अपने नेत्र बंद कर लिये। परन्तु बेटी कृष्णा! जैसा कि तू बुद्ध, महावीर और आदि शंकराचार्य जी के

प्रसंगों में सुन चुकी है ठीक उसी प्रकार इन सारे ही चिकित्सकों ने रोग के बाहरी लक्षण का इलाज किया, रोग के मूल कारण का नहीं रोग के बाहरी लक्षण को किसी औषधि के प्रयोग से दवा देना और बात है तथा उसका समूल नाश करना और बात। रोग के लक्षणों के दबने से रोग मिटता नहीं।

शरीर में रोग के मूल कीटाणु बने रहने से रोग और भी वेग से नये-नये रूपों में फूट पड़ता है। यहाँ भी यही हुआ। इनके इलाजों से उत्पन्न नये-नये रोगों से भारत माता और धरती माता की स्थिति और भी अधिक वेदनापूर्ण हो गई। इन महापुरुषों के अनुयायियों ने तो इनके नाम पर भी नये-नये मत पंथ चलाकर इनकी ऐसी मिट्टी पलीत की कि इन्हें चिकित्सक से रोगी की हिचकिचाहट नहीं कि श्री कृष्ण के पश्चात् सच में तो सुदूर पूर्व वैदिक युग के बाद केवल ऋषि दयानन्द को ही यह गौरव प्राप्त है जिसने भारत और मानव जाति के पतन, परतन्त्रता और दुःख दैन्य के मूल कारणों को समझा और उनकी सही चिकित्सा की। काश! हमारे कल्याण के लिए 18 घण्टे की समाधि सुख-जीवन मोक्ष को ठुकराने वाले, स्वयं विष पीकर भी अखिल मानवता को अमृतदान करने वाले इस महापुरुष की अन्तर्वेदना को हमारे देशवासी समझ पाते तो आज हमारे संसार का नक्शा और ही होता।

लेखक द्वारा प्रकाशित एवं निःशुल्क वितरित पुस्तकों की सूची :–

1. रामचरितमानससार
2. गीतासार
3. उपनिषद्सार
4. सत्यार्थप्रकाशसार
5. भक्ति
6. सुखीजीवन
7. आत्मबोध
8. वेदवाणी
9. वैदिकसाहित्य
10. अमृतवाणी
11. महर्षि दयानंद
12. स्वामी विवेकानंद
13. शरणागति
14. वैदिक रामायण
15. क्या आप जानते हैं ?
16. शेंर-ओ-शायरी
17. ओ३म्
18. गायत्री रहस्य
19. अमर धर्मग्रंथ
20. सुखी कौन?
21. वेदसार
22.

लेखक द्वारा अप्रकाशित पुस्तकों की सूची :–

1. अमर नीतिग्रंथ
2. पुराणपरिचय
3. ईश्वरसिद्धि
4. राष्ट्रभाषा हिन्दी
5. संस्कार
6. गीतांजलि
7. आर्यसमाज
8. ज्ञानामृत
9. यज्ञ
10. संत
11. संतवाणी
12. भतृहरिशतक
13. ब्रह्मचर्य
14. गृहस्थ
15. धर्म
16. कर्म
17. मन
18. भारत के क्रांतिकारी
19. भारत के भक्त
20. प्रभुभक्ति
21. ज्ञानगंगा
22. पाँच शत्रु
23. सच्ची वाणी
24. मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम
25. महावीर हनुमान
26. योगिराज श्रीकृष्ण
27. आदिशंकराचार्य
28. आचार्य चाणक्य
29. स्वामी रामतीर्थ
30. दस गुरु
31. आर्यसमाज के महामानव
32. आत्मकथा
33. वैदिक मनुस्मृति
34. वैदिक उपनिषद्वाणी
35. वैदिक दर्शनवाणी
36. वैदिक महाभारत
37. वैदिक गीता
38. **General English (Part I to V) (For All Classes)**
39. **Great Thoughts**
40. **Great Indians**
41. **Great Thinkers**
42. **Great Scientists**
43. सामान्य हिन्दी (भाग I-II) (सब कक्षाओं के लिये)
44. 1000 हिन्दी साहित्य प्रश्नोत्तरी
45. हिन्दी साहित्य का इतिहास
46. भाषा विज्ञान
47. आलोचना
48. साधना
49. मानषपीयूष
50. गीतापीयूष

कृपया पाठकगण इस ओर भी ध्यान दें कि इनकी निम्नलिखित पुस्तकों को इनकी Website : www.dpkapoorbooks.co.in पर भी देखा जा सकता है ।

1. अमृतवाणी
2. आर्यसमाज
3. अमर नीतिग्रंथ
4. अमर धर्मग्रंथ
5. ईश्वरसिद्धि
6. गायत्रीरहस्य
7. ज्ञानामृत
8. गीतांजलि
9. क्या आप जानते हैं ?
10. ओ३म्
11. पुराणपरिचय
12. राष्ट्रभाषा हिन्दी
13. संस्कार
14. संत
15. संतवाणी
16. शरणागति
17. शेर-ओ-शायरी
18. यज्ञ
19. भर्तृहरिशतक
20. ब्रह्मचर्य
21. गृहस्थ
22. धर्म
23. कर्म
24. मन
25. सुखी कौन ?
26. भारत के क्रांतिकारी
27. भारत के भक्त
28. प्रभुभक्ति
29. वेदसार
30. ज्ञानगंगा
31. पाँच शत्रु
32. सच्ची वाणी
33. मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम
34. महावीर हनुमान
35. योगिराज श्रीकृष्ण
36. आदिशंकराचार्य
37. आचार्य चाणक्य
38. महर्षि दयानंद
39. स्वामी विवेकानंद
40. स्वामी रामतीर्थ
41. दस गुरु
42. आर्यसमाज के महामानव
43. आत्मकथा
44. वैदिक साहित्य
45. वैदिक मनुस्मृति
46. वैदिक उपनिषद्वाणी

(जारी...)

47. वैदिक दर्शनवाणी
48. वैदिक रामायण
49. वैदिक महाभारत
50. वैदिक गीता
51. संस्कृतरहस्य
52. साधना
53. मानसपीयूष
54. गीतापीयूष
55. दादा पोते की बातें
56. दादी पोती की बातें
57. दो दोस्तों की बातें
58. **Great Thoughts**
59. **Great Indians**
60. **Great Thinkers**
61. **Great Scientists**
62. **General English**
    (Part I to V)
    (For All Classes)
63. सामान्य हिन्दी (भाग **I-II**)
    (सब कक्षाओं के लिये)
64. 1000 हिन्दी साहित्य प्रश्नोत्तरी
    (सब प्रकार की प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए)
65. हिन्दी साहित्य का इतिहास
    (पंजाब विश्वविद्यालय की एम.ए. हिन्दी की कक्षा के लिए)
66. भाषा विज्ञान
    (पंजाब विश्वविद्यालय की एम.ए. हिन्दी की कक्षा के लिए)
67. आलोचना
    (पंजाब विश्वविद्यालय की एम.ए. हिन्दी की कक्षा के लिए)